Text Dark And Light Within The Book Only

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_182639
UNIVERSAL
LIBRARY

Osmania University Library

Call No H181·0080354
C 44—

Accession No H6393

Author [illegible]

Title [illegible]

This book should be returned on or before the date last marked below

चन्दरबदन व महयार

(प्रेम काव्य)

'मुक़ीमी'

चन्दरबदन
व
महयार

सम्पादक

डॉ० सैयदा जाफ़र
ओमप्रकाश निर्मल

आन्ध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी
हैदराबाद-४

प्रकाशक

आन्ध्रप्रदेश हिन्दी अकादमी

४८, नागार्जुन हिल्स,

पंजागुट्टा, हैदराबाद-४

मूल्य : ३०.००

मुद्रक

लोकभारती प्रेस

१८, महात्मा गांधी मार्ग,

इलाहाबाद-२०००१

दो शब्द

आन्ध्रप्रदेश हिन्दी अकादमी ने अपने कार्यक्रमों के अन्तर्गत दकनी हिन्दी की अप्रकाशित उत्कृष्ट कृतियों को नागरी लिपि में प्रकाशित करने का काम भी हाथ में लिया है। 'चन्दरबदन व महयार' एक प्रेमकाव्य है। इसे उर्दू में मसनवी कहा जाता है। दकनी के प्रेम-कथा आख्यानों और भाषा के ताल्लुक़ से इस प्रेम-काव्य का विशेष महत्व है।

सन् १५१८ से १६८७ तक गोलकुण्डा पर ७ कुतुबशाही शासकों ने लगभग १६९ वर्षों तक शासन किया। गोलकुण्डा के बादशाहों के शासन काल में कला तथा साहित्य, विशेषत: दकनी के साहित्य की बड़ी उन्नति हुई।

हिन्दी को ले कर सदियों पूर्व दक्षिण में जो काम हुआ, इसका प्रमाण भी यह कृति है। हमारा एक उद्देश्य, ऐसी कृतियों के प्रकाशन के साथ, यह भी बताना है कि भाषाओं को ले कर जो विवाद पैदा किये जाते है वे बेमानी हैं। भाषा समाज व देश को जोड़ने का काम करती है न कि तोड़ने का। इस मसनवी का नागरी में लिप्यन्तरण एक उदाहरण प्रस्तुत करता है कि लगभग ३५० वर्ष पूर्व फ़ारसी लिपि में लिखी गयी यह रचना कौन-सी भाषा की मानी जाएगी! उर्दू और हिन्दी के जानकर इस कृति को किस भाषा की रचना मानेंगे? हिन्दी तथा उर्दू ने मिल कर ही इस पुरानी शैली दकनी का निर्माण किया है।

बहरहाल, आन्ध्रप्रदेश हिन्दी अकादमी की ओर से प्रकाशित दकनी हिन्दी की यह प्रथम पुस्तक हम आपके हाथों में सौंपते हुए यह आशा और विश्वास रखते हैं कि इसे आपका स्नेह मिलेगा और दकनी हिन्दी की अन्य अनुपलब्ध और अप्रकाशित रचनाओं को आप तक पहुँचाने का उत्साह भी।

मैं डॉ० सैयदा जाफ़र और अकादमी के निदेशक श्री ओमप्रकाश निर्मल की भी आभारी हूँ जिन्होंने इस कृति को बड़ी मेहनत से इतने कम समय में लिप्यान्तरित और सम्पादित करके आप तक पहुँचाने में मेरा सहयोग किया।

सधन्यवाद,

इन्दिरादेवी धनराजगीर
अध्यक्ष
आन्ध्रप्रदेश हिन्दी अकादमी

चन्दरबदन व महयार

भूमिका

"चन्दरबदन व महयार" नामक इस प्रेमकाव्य के कवि के नाम के बारे में विद्वानों की अलग-अलग राय है। मिर्जा मुहम्मद मुकीम मशहद (ईरान) के रहने वाले थे और उनके पिता का नाम मुहम्मद रज़ा था। "बुरहाने मआसिर" और "बसातीनुस्सलातीन" में इस कवि के नाम के आगे मिर्जा लिखा गया है। "हदीक़त्तुसलादीन" में निज़ामुद्दीन अहमद ने कवि का नाम मुहम्मद मक़ीम लिखा है लेकिन इन ग्रन्थों में कहीं भी कवि का उपनाम "मुक़ीमी" नहीं लिखा गया है। डॉ० ज़ोर लिखते हैं कि मिर्जा मुक़ीम ईरान से हिन्दुस्तान आये थे और बीजापुर में, जहाँ उनका देशवासी फ़ज़ोनी रहता था, बस गये थे। डॉ० ज़ोर, नसीरुद्दीन हाशिमी और अकबरुद्दीन सिद्दिक़ी का मत है कि मिर्जा मुक़ीम का ही उपनाम मुक़ीमी था। फ़ारसी में उन्होंने ख़मसा और क़सीदे अपनी यादगार के रूप में छोडे हैं तो दकनी में "चन्दरबदन और महयार"। इन तीनों के इस कथन के विपरीत "बुरहाने मआसिर" और "बसातीनुस्सलातीन", "गुदस्तए बीजापुर" और "फ़ुतुहाते आदिलशाही" के लेखकों, क्रमशः सर्व श्री अली बिन अज़ीज़ुल्ला तबा तबा, इब्राहीम ज़ुबेरी, मीर अहमद अली और फ़ज़ोनी उस्तराबादी का मानना है कि कवि का नाम मिर्जा मुक़ीम लिखा गया है और कहीं भी "मुक़ीमी" नजर नहीं आता है।

"अहवाले सलातीने बीजापुर" के लेखक श्री ग़ुलाम मोहियुद्दीन जहाँ मिर्जा मुहम्मद मुक़ीम की उर्दू शायरी का ज़िक्र करते है वहाँ "मुक़ीमी" के स्थान पर "मुक़ीम" ही लिखते हैं। इन परस्पर विरोधी मतों के आधार पर हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि श्री अकबरुद्दीन सिद्दिक़ी का यह ख़याल कि मिर्जा मुहम्मद "मुक़ीम" और "मुक़ीमी" एक ही कवि था, ग़लत मालूम होता है।

जमील जालेबी लिखते हैं कि अन्जुमने तरक़्क़ी उर्दू, कराची के एक प्राचीन ग्रंथ में एक "फतहनामा" लिखा हुआ मिला है, उसमें कवि का नाम मिर्जा

मुक़ीम लिखा है। किन्तु इसी ग्रंथ में "चन्दरबदन व महयार" भी लिखी गयी है और इसके कवि का नाम "मुक़ीम" लिखा हुआ है। जमील जालेबी ने नज़ीर अहमद की तरह इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि मिर्जा मुक़ीम और "मुक़ीमी" दो अलग-अलग व्यक्ति थे।

मिर्जा मुक़ीम बीजापुर के सुलतान मुहम्मद आदिलशाह के दरबार से सम्बद्ध थे और फ़ारसी में कविता करते थे। इसी कवि ने क़िलए बखेरी की विजय पर "फ़तेहनामा" लिखा था। "मुक़ीमी" "चन्दरबदन व महयार" का कवि है और उसने भी फ़ारसी में एक मसनवी अपनी यादगार के रूप में छोड़ी है और इन दोनों मसनवियों में उसने अपना उपनाम "मुक़ीमी" ही लिखा है। उपर्युक्त के अतिरिक्त भी बहुत सारे विद्वानों की राय "मुक़ीमी" के नाम को ले कर परस्पर विरोधी हैं।

हमारी राय भी यही है कि मिर्जा मुकीम और "मुक़ीमी" दो अलग-अलग व्यक्ति थे। मक़ीम ईरानी नस्ल था और फारसी में कविता लिखता था और "मुक़ीम" के साथ-साथ 'सलमा' उपनाम का प्रयोग भी करता था। इस कवि का मुहम्मद आदिलशाह के दरबार से सम्बन्ध था। इसके अतिरिक्त निजामशाही, आदिलशाही और कुतुबशाही दरबारों में जाने का अवसर भी उसे मिला था। इसने "फ़तेहनामा बखेरी" लिखा था जिसके कुछ पद इस प्रकार हैं :

कह्या ख़ान बाबा ने शह ख़ास सूं,
सुखी रह तू राजे भी इस तास सूं।

न कर कुछ बखेरी की तूं फ़िक्र ते,
सफ़ा रख तूं ख़ातिर को इस ज़िक्र ते।

तुजे छोड़ जावे बखेरी कहां,
बखेरी कहां बल बखेरी कहां।

नको दिल जलावे बजंगों जिदल,
किते राय ल्यावे पकड़ पांव तल।

तुजे इज्जो तमकीं है सुबहान सूं,
खड़क पर है जिस शाहे मर्दान सूं।

अगर इदाराए अदबियाते उर्दू के एक प्राचीन ग्रन्थ में उल्लिखित तथ्य को हम सही मान लें तो "मुक़ीमी" ने अपने शेरों में गोलकुण्डा के सुलतान अब्दुल्ला कुतुबशाह की प्रशंसा की है। दूसरी ओर अकबरुद्दीन सिद्दिक़ी यह कहते हैं कि जब राजदूत के तौर पर मुक़ीमी गोलकुण्डा में थे तब उन्होंने अब्दुल्ला कुतुबशाह की तारीफ़ में ये शेर कहे होंगे। बहरहाल, ऐसा महसूस होता है कि "चन्दरबदन व महयार" का कवि बीजापुर का "मसनवी निगार" नहीं बल्कि गोलकुण्डा का फ़नकार था। प्राचीन दकनी काव्यों में बादशाह की "सिफ़त" बयान करने की परिपाटी का बहुत महत्त्व था, और मसनवी के कवि को इस बहाने बादशाह से अपनी वफ़ादारी और आज्ञाकारिता दिखा कर गर्व अनुभव होता था। "दरसिफ़ते बादशाह सुलतान अब्दुल्ला" के पहले ही शेर से यह सिद्ध होता है कि "मुक़ीमी" अब्दुल्ला कुतुबशाह का एहसानमन्द था और उस पर बादशाह की बड़ी कृपा थी। वह कहता है :

मुक़ीमी तू कर सिफ़त शह का इता,
जिनें तुजकूं रौशन किया है इता।

इस शेर के शब्दों—"रौशन किया" से मुक़ीमी की शोहरत और समृद्धि का पता चलता है।

अकबरुद्दीन सिद्दिक़ी ने मिर्जा मुक़ीम को "इमामिया मजहब" (शिया सम्प्रदाय) का अनुयायी बताया है और लिखते हैं : "इसका इमकान है कि मुल्ला रज़ाई बीजापुर आये हों और इसके बाद बीजापुर से गोलकुण्डा गये हों। मजहबे इमामिया के ताल्लुक़ से मुल्ला रज़ाई और मुल्ला मुक़ीम का जो मर्तबा साहबे "बुरहाने मआसिर" ने बताया है, इससे भी इसकी तसदीक़ होती है।" किन्तु "मसनवी चन्दरबदन व महयार" के आन्तरिक साक्ष्य से पता चलता है कि यह कवि सुन्नी सम्प्रदाय से संबंधित था क्योंकि उसने "दर मनरवबते चहार यार किबार" में चारों कुलफ़ा की तारीफ़ की है और कहता है कि इन चारों में फ़र्क़ करने वाला "अहमक़" है :

जिगर हैं मुहम्मद के यो चार यार,
जिनें फ़र्क़ देखा सो अहमक़ शुमार।

जो कोई उनूं चारों ते मुनकिर अहे,
वो लाशक मुहम्मद सती दूर अहे।

ज़ाहिर है कि ये कथन शिया विचारधारा से संबंधित नहीं हैं। और इनका कवि मिर्ज़ा मुक़ीम नहीं, "मुक़ीमी" हो सकता है।

स्प्रिंगर ने अपने केटलॉग में "सोमहार की कहानी" का ज़िक्र किया है, जो असल में 'मुक़ीमी' की कोई अलग मसनवी नहीं है, बल्कि मसनवी "चन्दर-बदन व महयार" ही है। अकबरुद्दीन सिद्दिक़ी लिखते हैं कि स्प्रिंगर ने निम्न-लिखित शेर पढ़ कर इसे "सोमहार की कहानी" नाम दे दिया :

शरहा सट मुक़ीमी पिरत प्यार का,
क़िसा कह तू पूरा सो महयार का।

प्राचीन ग्रन्थों की किताबत में शब्द महयार स्पष्ट नज़र नहीं आता बल्कि मिहार ही पढ़ने में आता है। इस तरह ' 'सो" को "महयार" से जोड़ कर स्प्रिंगर ने मसनवी "चन्दरबदन व महयार" का नाम "सोमहार की कहानी" रख दिया।

"चन्दरबदन व महयार" की इदाराए अदबियाते उर्दू में दो पांडुलिपियाँ हैं। सालारजंग संग्रहालय के पुस्तकालय में एक प्रति है। स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरी (हैदराबाद) में दो पाण्डुलिपियाँ हैं और अन्जुमने तरक़्क़ीए उर्दू (दिल्ली) में दो पाण्डुलिपियाँ हैं। डॉ० ज़ोर लिखते है कि इस मसनवी की पाण्डुलिपियाँ इण्डिया आफ़िस और एडनबरा विश्वविद्यालय में भी मौजूद हैं।

सआदत अली रिज़वी को "मुक़ीमी" का एक मर्सिया भी मिला है जिसके कुछ शेर इस प्रकार हैं :

हैफ़ क्या गुल हुवा है जन्नत में,
हूर व ग़िल्मा फिरें अदन सूँ निकल।

जग के बुस्ताँ सकल गये कुमलाय,
बुल बुलाँ ज़ार है चमन सूँ निकल।

जब मुक़ीमी बयाने ग़म करता,
आग झड़ता है सब बदन सूँ निकल।

नूरुल्ला ने अपनी पुस्तक "तारीख़े आदिलशाहिया" में और इसके बाद शाह अली तजल्ली ने "तूज़के आसफ़िया" में चन्दरबदन व महयार के क़िस्से पर

उत्तर भारत के सैफ़ुल्ला नामक एक कवि ने भी इस प्रेम-कहानी को काव्य का जामा पहनाया था। इससे पता चलता है कि उत्तर भारत में भी यह प्रेम-कहानी काफ़ी प्रचारित थी।

एक अन्य कवि शेख मुहम्मद अब्दुल क़ादिर "शाकिर" ने भी, जो तत्कालीन मद्रास राज्य के वानमबाड़ी के रईस थे, इस प्रेम-कहानी को सूफ़ियाना ढंग में प्रस्तुत किया है। यथा :

मसनवी चन्दरबदन महयार की,
मेरी थी देखी हुवी यक बार की।

मौलिवी ए बाख़रे आगाह नाम,
नज़्म की थी आपने बाइन्तज़ाम।

मिल गयी मुझको पुरानी भी किताब,
उस ज़माने की थी वो लिक्खी किताब।

थी दकन वालों की वो अगली ज़बाँ,
जिसमें मतलब का न मिलता था नशाँ।

इस प्रेम-कहानी को पढ़ने से ऐसा महसूस होता कि कवि यह बताना चाहता है कि प्रेम एक महान् शक्ति है जिसके सामने धर्म और जीवन बनावटी बंधन हैं। प्रेम मानवीयता का धर्म है, और जीवन का तत्त्व है। मोहब्बत का ख़मीर एकता और भाईचारगी से उठा है। ज़िन्दगी का दारोमदार प्रेम पर ही आधारित है। कवि कहता है :

पिरत की नदी नित उबलती अहे,
पिरत सुँईंच दुनिया यो चलती अहे।

पिरत को बनाया है करतार वो,
पिरत सुँईंच सँवार्या है संसार वो।

पिरत बिन इशक़ कँईं उपजता नहीं,
कि मरना व जीना समजता नहीं।

दकनी के अधिकांश कवियों की रचनाओं में यही भावना दिखाई देती है। वे अपनी रचनाओं के द्वारा यह बताना चाहते थे कि सब इन्सान बराबर हैं। इनमें कोई छोटा-बड़ा और अच्छा-बुरा नहीं है। सब एक ही ईश्वर की सृष्टि हैं और प्रेम के बन्धन में बँधे हुए हैं। इन्हें ख़ानों में बाँट कर जात-पांत और धर्म का लेबल नहीं लगाया जाना चाहिए। दकन के सूफ़ी कवियों ने बार-बार इस प्रकार के विचार प्रकट किये हैं।

सिराज औरंगाबादी कहते हैं :

कुफ़्रोईमाँ दो नहीं हैं इश्क़ कीं।

आख़िर दोनों का संगम हो गया। फ़ारसी के एक शायर "जामी" ने कहा था :

बन्दए इश्क़ शुदी तर्कोन सब कुन "जामी" :
कि दर ई राह फुलाँ इब्ने फुलाँ चीज़े नीस्त।

"मुक़ीमी" ने यह प्रेम-कहानी हिज़री १०३७ से १०६७ अर्थात् १६२८ से १६५६ के बीच लिखी थी। मुहम्मद आदिल शाह के शासन काल की अवधि भी यही है। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि ने अपने जीवन के अन्तिम काल में इस रचना का सृजन किया था, क्योंकि वह ख़ुद इस तथ्य की ओर इशारा करता है :

कहाँ यो हिकायत कहाँ मैं ढल्या,
बचन का तग़ावर कहाँ ले चल्या।

कहाँ ओ हिकायत कहाँ हाल मुज,
कहाँ ओ जवानी कहाँ चाल मुज।

इस प्रेम-कहानी की भाषा बहुत सहज और प्रवाहमयी है। इसकी एक विशेषता यह भी है कि कवि सीधे-सीधे कथा पर ही टिका रहता है और इधर-उधर की व्यर्थ चीज़ों को काव्य-वस्तु नहीं बनाता। कथा में पाठक की दिलचस्पी बराबर बनी रहती है। "वजही", "गवाज़ी" और "नुसरती" जैसे अन्य प्रसिद्ध

कवियों की तरह वह परिवेश, प्रकृति और वातावरण के चित्रण से दूर रह कर सिर्फ़ कथा पर ही ध्यान केन्द्रित रखता है जो कि "मुक़ीमी" की काव्यक्षमता की कमज़ोरी भी बन जाती है।

इस मसनवी का केन्द्रीय चरित्र महयार है। पूरी कहानी उसी के इर्द-गिर्द चक्कर काटती है। इस मसनवी में वैसे भी बहुत कम चरित्र हैं। चन्दरबदन के पात्र में कोई गति नहीं है। पीरे सय्याह, क़ासिद और हाजिब के पात्र बराये नाम हैं। हाँ, बादशाह का पात्र इनके मुक़ाबले में ज़्यादा सक्रिय है। वह एक दयालु इन्सान है और परेशान हाल महयार की हर मुमकिन सहायता करता है।

मसनवी "चन्दरबदन व महयार" के बहुत से शेरों में "तल्मीह" मौजूद है। "तल्मीह" की एक ख़ूबी यह है कि इसके द्वारा कवि विस्तार में जाने से बच जाता है और अपने भावों की अभिव्यक्ति में उसे मदद मिलती है। "मुक़ीमी" ने इस अलंकार का प्रयोग किया है। यथा :

हिन्दू राज में ज्यूं कि इन्दर अहे,
मुसलमान में ज्यूं सिकन्दर अहे!

जवानी में है आज ओ मदमति,
है महबूब सबमें ओ रम्भावति।

हिन्दू मैं कहाँ होर तुरक तू कहाँ,
कहाँ रामसीता मुरक तू कहाँ?

सो मुज पर गुलामी भी साबित हुवी,
तू सुलतान मेरा सचा गजनवी।

पुरउपकार ज्यूं बिक्रमाजीत है,
सो उसते बड़ा तूं महाजीत है।

"मुक़ीमी" की इस मसनवी का दकनी में वह स्थान नहीं है जो "वजही" की "कुतुबमुश्तरी", "ग़वाज़ी" की "मैनासतवंती" और "नुसरती" की "गुलशनेइश्क़" को प्राप्त है। फिर भी इस अछूती प्रेम-कथा के कारण इसको

इतना महत्त्व मिल गया है।

इस मसनवी में "मुक़ीमी" ने कहीं-कहीं "सरापानिगारी" से भी काम लिया है। चन्दरबदन के रूप का वर्णन करते हुए वह कहता है :

उसे एक बेटी है चन्दरबदन,
कि चन्दर जिसे देख करता सरन।

परी भी इती कँई नूरानी नहीं,
सूरत में उसे जोड़ सानी नहीं।

जवानी में है आज ओ मदमति,
है महबूब सबमें ओ रम्भावति।

यूँ खूबाँ का सरदार उसकूँ किया,
दुनिया में की खूबी उसे सब दिया।

एक और जगह वह चन्दरबदन के विषय में कहता है :

न बेटा उसे एक बेटी अथी,
कि तन पर रतन सब समेटी अथी।

अथी खूबसूरत में जिवु शहपरी,
व लेकिन परी सूँ अथी बरतरी।

लताफ़त में मौजूँ वो शीरीं सुख़न,
अथा नाँव उसका सो चन्दरबदन।

चितारी क़ज़ा का जो उतर्‌या अथा,
कि सूरत अजायब वो चितर्‌या अथा।

वो को नँई तो वैसा मुसव्विर कहाँ,
चितरने कूँ सूरत परी की यहाँ।

चंचल मत की माती नजाक़त की धात,
फिरे नित हमेशा सहेल्यां संगात।

"मुक़ीमी" के काव्य में उपमा और रूपक का प्रयोग न के बराबर हुआ है। इसकी एक दो मिसालें ही उसके यहाँ उपलब्ध हैं :

कहाँ ते यो दुख आ पड़्या मुज उपर,
ख़ुशी का मेरा सब छुड़ाया नगर।

कि ग़ालिब हो मुज पर अहे नफ़्स यूँ,
तुरंग कूँ चलावे चड़नहार ज्यूँ।

सो भौराय राजे को यूँ जाब दी
अपस मुख के अफ़ताब कूँ ताब दी।

उर्दू भाषा के प्रारम्भ के बारे में महमूद शीरानी ने अपनी पुस्तक "पंजाब में उर्दू" में यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि उर्दू का जन्म पंजाबी से हुआ है। उदाहरण के रूप में उन्होंने दकनी कविता को प्रस्तुत करते हुए बताया है कि दकनी में पंजाबी के शब्दों का बहुतायत से प्रयोग हुआ है। "मुक़ीमी' की इस मसनवी में भी दकनी के दूसरे कवियों की भाँति पंजाबी के बहुत से शब्दों का प्रयोग किया गया है। जैसे : कधी, कीता, चक लिया आदि।

जैसे—

न ताक़त कधीं कुछ इबादत किया,
न तेरे अमर का इताअत किया।

फ़िराक़ी बिरह का हो निकल्या उनें,
बिरह के सदर सर ते चक लिया उनें।

वले उन न कीता किसी पर नजर,
न कीता बचन टुक जबाँ खोल कर।

पंजाबी में भविष्यवाचक के लिए "सूं" का इस्तेमाल होता है। दकनी के कवियों ने इस "सूं" का बहुत खुल कर प्रयोग किया है।

जैसे—

हुवा पाक मुजतन हुवा साफ़ दिल,
वो आशिक अँगे मैं ना होसूं खजिल।

कि शह को दुवा कर यो बोलो नशां,
इता ना अटकसे जनाजा यहाँ।

दकनी के अन्य प्रमुख कवियों और "मुक़ीमी" ने भी पंजाबी के साथ-साथ, ब्रज भाषा के शब्दों का प्रयोग किया है। संभवतः संगीत और कृष्णभक्ति के प्रभाव से यह हुआ हो। क्रिया (मस्देर[1]) के रूप में इसके बहुत से उदाहरण मिलते हैं।

जैसे—

कि ज्यूं नाजमाती वो चन्दरबदन,
निकल आयी उस दैर पूजा करन।

देखत उस परी को दिवाना वले,
पड़्या दौड़ के जा वो कदमा तले।

सो इस नार पर दर्द कारी हुवा,
दुख उसके मरन का सो भारी हुवा।

अपस में अपस आह मारन लगी,
सँगाती कूं अपने पुकारन लगी।

कुछ ऐसे शब्द भी इस काव्य में मिलते हैं जो आज भी राजस्थान और गुजरात में बोले और समझे जाते हैं।

१. वह शब्द जिससे क्रियाएँ, कर्ता तथा धातु कर्म बनते हैं।

जैसे—

कहूँ जाके बेगी यो अपनी फ़िकर,
जो होवे ख़ुदा का रहम कुच मगर।

सट्या खान-पानी व सोने को भी,
लग्या भोत अलडाके रोने को भी।

कह्या जा उसे ऐ दिवाने बशर,
कहाँ सूँ तू आया चल्या है किधर!

जड़त कर सट्या था उनूँ तन सकल,
मगर खन रतन के वहाँ भोत निकल।

इसी प्रकार सँपड्या, सूँ और सगला जैसे शब्दो का प्रयोग भी मुक़ीमी ने किया है।

दकनी पर मराठी का भी प्रचुर प्रभाव दिखाई देता है। दकनी के कवियों के काव्य में मराठी के बहुत से शब्द मिलते हैं। दकनी के अन्य कवियों की तरह "मुक़ीमी" के यहाँ भी मराठी के शब्दों का प्रयोग मिलता है।

जैसे—

अथा बादशाह वाँ का गुन-ग्यान का,
पुर उपकार शाहाँ में लै मान का।

कि ये रंग क्या मोतियाँ नको बाँद ले,
किसी के बदल तू नको शाँद ले।

"मुक़ीमी" ने, मराठी का जो एक विशिष्ट लहजा है, उसका बहुतायत से प्रयोग किया है; जैसे, मेराइच, वंईंच, तेराइच आदि। यह लहजा मराठी भाषा की पहचान ही बन गया है।

जैसे—

पिरत के दरिया का शिनावर हूँ मैं,
पिरत केइच ग़ोते में यावर हूँ मैं।

अपस सेंइच मिल्या आके यक यार मुज,
वफ़ादार दिलयार दिलदार मुज ।

पिरतमेंइंच इसके पिरत जोश हो,
रह्या मिल मुहब्बत में मदहोश हो ।

धरया यूंइच दिल पर कि जाऊं वहां,
मगर उस परीकूं तो पाऊं वहां ।

देख्या शाह हैरान इस हाल कूं,
किया वांइच मतफ़ून उसी हाल सूं ।

"मुक़ीमी" की "चन्दरबदन व महयार" तथा दकनी के अन्य कवियों की रचनाओं से गुज़रते समय हम जो भाषा वैविध्य पाते हैं उससे ऐसा लगता है कि अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए वह विभिन्न भाषाओं के आम बोल-चाल के शब्द ले लेते थे । पंजाबी, ब्रज, राजस्थानी, गुजराती और मराठी के शब्दों का खुल कर प्रयोग इस बात का प्रमाण है । कुछ विद्वान् दकनी की इन रचनाओं में प्रयुक्त भाषा को दकनी हिन्दी के नाम से भी पुकारते हैं । अरबी-फ़ारसी के शब्दों के प्रयोगों के बावजूद दकनी की रचनाएं इस दृष्टि से हिन्दी के ज्यादा करीब लगती हैं और हिन्दी भाषी के लिए भी उतनी ही सहज ग्राह्य है जितनी कि उर्दू भाषी के लिए ।

जैसे—

"तेरा नांव लेते हैं जिवु बान सब"
"पिरत जीव सूं हाथ धोती अहें"

"पिरत नेह के बीज बोती अहे ।"
"सुंग्या बास कईं उस चंचल का उनें"

"चंचल अत छबेली निछल का उनें"
"बिरह की सुलग आग मन कूं लगी
जला मन को कर राख तन कूं लगी ।"

"धर्‌या आस तेरी निरासी न कर"
"धर्‌या सीस उसके चरन पर उनें"

"पड़्या सोंच कुछ सुध न कुछ ध्यान था"
"बिरह् के रयन को उजाला कहाँ"
"कठिन रात जागे उताला कहाँ ?"

दकनी के विशेष शब्द भी "मुक़ीमो" की कविता में हमें नज़र आते हैं। यथा : सट (डालना, छोड़ना), घात (जैसा), इता (इतना, अब), कितक (कितना), केरा (का), चितारी (चित्रकार), अदिक (अधिक), लटकती (मटकती), फ़ाम (समझ), निवड़ (झुकना), पीछी (बाद), माना (डालना), कवाना (कहलाना), भोत (बहुत), हटक्या (टोकटाक), कने (पास), सँपड़्या, हँपड़्या (पकड़ना, प्राप्त करना) आदि-आदि।

जैसे—

कमन्दे पिरत बीच सँपड़्या हूँ मैं,
मुक़ीमी पिरत सुंईच अँकड़्या हूँ मैं।

अर्बां का इता (इतना) हूं सचा जोहरी,
करूँ नित सुख़न सूँ गुहर गुस्तरी।

इशक का मरातिब किसे फ़ाम है
कि आशिक़ कवाना कठिन काम है।

कि अँपड़्या आलम महल के कने,
खड़ा हूँ तू जा बोल चन्दर कने।

दकनी में ह-कार अथवा महाप्राण को निकाल देने का विशेष रुजहान है। जैसे समझ का समज, तुझ को तुज, दुःख को दुक, सीखा को सिक्या, कुछ को कुच, आदि।

फ़िराक़ी हो बावल बला सर लिये,
सिना फाड़ दुक सूँ जिगर चिर लिये।

इलाही मुजे खूबसूरत दिखा,
परम का पियाला सदा मुज चखा।

परम बास हरकईं की संगत अथा,
खुदा पास दिलबर कूं मंगता अथा।

किया नफ्स सरकश सो इस घात के,
सिक्या नईं पकड़ने उपर हात के।

दीर्घ स्वर को ह्रस्व बना देना भी दकनी का एक और रुजहान है। जैसे : आसमान का असमान, सवार का स्वार, जवाब का ज्वाब, सोई का सोइ, नईं का नंइ, ऊपर का उपर, जात्रा (यात्रा) का जतरा आदि।

सुन्या जब बचन यो उनें कान धर,
खबस हो चल्या रूह असमान पर।

मुक़ीमी बचन का तुरंग स्वार तू,
बिसर कां चला है तू महयार कूं।

कही यो जो हासिल यो होना मुजे,
फिरा ज्वाब लेकर सो देना मुजे।

दिया हुक्म शह ने ढंडोरी उपर,
कि जांलग जना हैं शहर के भितर।

क़ज़ा लाई देखो कहां ते कहां,
उसी देस जतरा भरा था जहां।

सो यूं कहि सोइ जा अपन ठार वईं,
निकल रूह तन सूं चल्या भार वईं।

हुवा चूंके शह पो यो ज़ाहिर हवाल,
पड़्या नंइ पसन्द उस किसी का जमाल।

२

दकनी के व्याकरण की एक विशेषता यह भी है कि क्रिया के अन्त में 'या' लगा देते हैं। यथा बोल्या, कह्या, सुन्या, चल्या, लग्या आदि।

सुन्या हूँ कि कहते हैं सुन्वरपटन,
अथा राज वाँ एक हिन्दू बरन।

मंग्या जो क़बर में उतारूं उसे,
दफ़न कर दुनिया सूँ बिसारूं उसे।

हुवा ज्यूँ अमल सब क़बर का तमाम,
उठ्या दफ़्न करने कूँ शह नेकनाम।

सुन्या कोई ना अछ से हुवा है कहाँ,
जो देख्या अछे कोई फिरके जहाँ।

दकनी में एकवचन को बहुवचन बनाने के लिए आ-कार और चन्द्रकार (अलिफ़ और नून) लगा देते हैं। जैसे बात–बाताँ, घात–घाताँ, चाल–चालाँ, हाथ–हाथाँ, दुख–दुखाँ आदि।

कि राजाँ में ओ राज जगराज था,
कितक मुल्क का उसकूँ खुश बाज था।

न अव्वल न आख़िर न ऐसा मगर,
जो होठ्याँ में ही जीवु रह्या था पकड़।

हुवा हुक्मशह का वज़ीराँ उपर,
जिते उस शहर के अमीराँ उपर।

मिल्या था ख़लक होर भर्‌या था बज़ार,
खड़े देखने कूँ हज़ाराँ हज़ार।

सर्वनाम का प्रयोग दकनी में अपने ढंग से किया जाता है जैसे : उन, उनें, यो, ओ, इता, जिता, तूं उनेंइच आदि। यथा :

कि देख्या उसे ज्यूं वफ़ादार ओ,
हुवा वंइच आशिक़ की यक बार ओ।

कता हूं तुजे मैं कि ऐ गुनभरी,
तूं करना इता कुच मेरी दिलबरी।

जो उनेंइच करती है दिल पर सितम,
करे चूंके माशूक़ सरता क़दम।

बचन उस मोहन का जबां प उनें
धर्‌या याद सब बिसर कर उनें।

कि [illegible] ा चल्या यूं कितक देस कूं,
जमं [illegible] अंपड्‌या वो यक देस कूं।

यो हं .. नहीं फ़ाम तुमना को कूच,
खड़े देखते सब दिवाने अबूज।

कुछ स्त्रीलिंग शब्दों का पुंलिंग और पुंलिंग शब्दों का स्त्रीलिंग में प्रयोग भी "मुक़ीमी" और दकनी के अन्य कवियों ने किया है।'यथा :

शहा देख कर क़ुदरते बेनियाज़,
कि आशिक़ जनाज़े का कीता नमाज़।

बुजा घर में बैठी न किस बोल कर,
कही वो कर अपना कथा खोल कर।

इस तरह "मुक़ीमी" की इस मसनवी पर हमने संक्षेप में हर दृष्टि से विचार किया है और इसके सभी पक्षों को पाठकों के समक्ष रखा है। दकनी के प्रेम-कथा आख्यानों और भाषा के ताल्लुक़ से इस मसनवी का अपना महत्त्व है।

भाषाओं को ले कर जो विवाद पैदा किये जाते हैं, उस दिशा में भी इस मसनवी का नागरी में लिप्यन्तरण एक ऐसा उदाहरण है जो सिद्ध करता है कि लगभग ३५० वर्ष पूर्व फ़ारसी लिपि में लिखी यह रचना अब जब नागरी में आ रही है तो आज का हिन्दी का पाठक उसे किस भाषा की कृति मानेगा ?

—सम्पादक द्वय

किस्सा चन्दरबदन व महयार

मुक़ीमी

दर तौहीदे बारी ताल*

ख़ुदा कुं सज़ावार[1] किबरोमनी[2],
तुं क़ादिर[3] है क़ुदरत का साहब धनी।

जो फूँक्या है आदम मने रूह कूँ,
सम्हाल्या है तूफ़ाँ सती नूह[4] कूँ।

किया नार[5] गुलज़ार रब्बुलज़लील[6],
सो नमरूद[7] के हाथ बाँच्या ख़लील[8]।

जिते सब संवार्या है जन्नत भितर,
मोहम्मद का साया है उम्मत उपर।

सुलहमान कूं पादशाही दिया,
मोहम्मद को ख़तमे नबुवत[9] किया।

रहीमा ख़लक पर तु रहमान है,
निरंकार बेचूं तुं सुबहान है।

---

* ख़ुदा की तारीफ़ में।

१. योग्य, २. बड़ाई, ३. समर्थ, ४. एक पैग़म्बर जिनके समय में पानी का बड़ा तूफ़ान आया था, जिसमें सारा संसार नष्ट हो गया था, कुछ आदमी बचे थे जिनकी संतान हम हैं। ५. आग, ६. महान् ईश्वर, ७. एक बादशाह जिसने इब्राहीम को आग में जलाना चाहा था किन्तु वह आग का समुद्र उनके लिए बाग़ बन गया। ८. इब्राहीम, ९. पैग़म्बरी।

अँधियारा करे और उजाला तुहीं,
उचावे सुलावे ताला तुहीं।

किया रिज़्क़[1] सब पर भी मक़सूम[2] तुँ,
क़वीदस्त[3] क़ायम है क़य्यूम[4] तुँ।

चंदा तुझ हुकम सूँ निकलता अहे,
कि बढ़ता है दायम[5] व घटता अहे।

सुरज नित गरम धूप बारे सदा,
वो मशरिक़ से मग़रिब सिधारे सदा।

फ़लक से ज़मीं लग के है शाह तुँ,
बनाया है अन्जुम[6] मलिक[7] माह तुँ।

तेरा नाँव लेते हैं जिवुदान सब,
तुझे कर समझते हैं सुबहान सब।

तुँ ऐसा धनी सब सिती बेनज़ीर,
तुहीं है अला कुल्ले[8] शइन क़दीर।

है साहब तुँ ऐ पाक परवरदिगार,
रख्या अर्श[10] व कुरसी फ़लक बरक़रार।

ज़मीं पर किते धात[11] गुलशन किया,
सो अलवाननेमत[12] सुँ रोशन किया।

---

१. भोजन, २. वितरित करना, ३. शक्तिशाली, ४. अनश्वर, ५. हमेशा, ६. नक्षत्र, ७. फ़रिश्ता, ८. चाँद, ९. सब चीज़ों पर अधिकार रखने वाला, १०. आकाश, ११. क़िस्म, १२. तरह-तरह की नेमत।

तेरा हुक़्म सब पर है खाली नहीं,
धनी कोई तुजबिन मिसाली नहीं।

तुं है पाक बेऐब सब ऐब तें,
क़बी' खेल खेले इलम ग़ैब तें।

सज़ावार तुजको यो मैदान है,
क़ज़ा हौर क़दर का तुं सुलतान है।

किया हौर करेगा खलासी के तईं,
खड़े पल मे कईलख तमाशे के तईं।

कहाँ जल समन्दर भितर कछ वो मछ,
करम तुज रहीमा का जिवु ते है सच।

मरा जिवुकारी तो इनसान में,
करनहार सूरत तो ज़हदान[२] में।

---

१. समर्थ, २. गर्भ में।

मुनाज़ात बा तज़र्रे कर्दन*

मुजे फ़ैज़[1] कुछ बख़्श तुज ध्यान का,
इलाहो तु हाफ़िज़[2] है ईमान का।

मेरा दीन - ईमान सारा सो तुँ,
मेरे जिवु में कीता है ठारा सो तुँ।

मुजे जग में यारब पुरउमोद कर,
रतन के बचल कूँ तुँ जावेद[3] कर।

ख़ुदाया तुँ दाना[4] है मुज हाल पर,
कि चूक्या हूँ या चूक अफ़ाल पर।

नहीं मुज अक़ल नेक अफ़ाल[5] सुँ,
ढल्या नफ़्स[6] ग़फ़लत में बदहाल सुँ।

न ताक़त कधी कुछ इबादत किया,
न तेरे अमर का इताअत[7] किया।

क़िसा नफ़्श सरकश[8] सो इस धात के,
सिक्या नईं पकड़ने उपर हाथ के।

---

* दीन भाव से प्रार्थना।

१. देन, २. रक्षक, ३. अमर, ४. ज्ञानी, ५. काम, ६. आत्मा, ७. आज्ञापालन, ८. विद्रोही।

कि ग़ालिब हो मुज पर अहे नफ़्श यूं,
तुरंग को चलावे चड़नहार जूं।

कि पकड़्या हूँ यों आस हो शर्मशार,
कि अपने करम सूं बख़श मुंज ग़फ़ार[1]।

तुं हसरत सुं दिल के ग़नी[2] कर ग़नी,
कि जावे निकल सर ते मेरे मनी[3]।

दुनिया में बहुत ख़ार नाचीज़ हूँ,
नज़र कर तुं करतार नाचीज़ हूँ।

जो हो दिल ते मुज दूर ज़र की मुराद,
मोहस्सिल मुजे को जो होये कुशाद[4]।

दिखा सुख दुनिया में जफ़ा कर उतार,
बेहिस्तान में जाए कर मुज क़रार।

सिफ़त तेरी कहने किसे है ज़बाँ,
कहाँ तुज बुजरगी बशर यो कहाँ।

मेहर दे मुक़ीमी ज़बाँ पर जफ़ा[5],
ज़े नाँतें मोहम्मद नबी[6] मुस्तफ़ा,

कि लावे मुक़ीमी ज़बाँ पुर सफ़ा,
ज़े मदहे[7] रसुल ख़ातमे अम्बिया[8]!

---

१. क्षमा करने वाला, २. निस्पृह, ३. अहम्, ४. विस्तृत, ५. सफ़ाई, ६. मुहम्मद की प्रार्थना से, ७. तारीफ़, ८. पैग़म्बर।

दर नाते मोहम्मद मुस्तफ़ा*

दो जग का खलीफ़ा खुदा का रसूल,
हुवा दीन जिसकी बक़ा[1] पर कुबूल।

दो जग का है सुलतां अमीने[2] बतूल,
हुवा है बक़ा जिस अज़ल[3] ते वसूल।

समाता अरज़[4] में जो पैदा अछे,
ज़े नाते मोहम्मद में शैदा अछे।

शरफ़[5] पाया उम्मत[6] ने यासीन[7] सूं,
भी ताहा[8] व तम्ज़ीद[9] व तमकीन[10] सूं।

क़बी दीन क़ायम अबद ता अज़ल,
हुवे दीन मन्सूख इसी दीन तल।

क़लीमी[11] की तसदीक़ जो जग को बख्श,
खबर ल्यायवे रैन - मेराज[12] बख्श।

---

* पैग़म्बर के लिए लिखी जाने वाली कविता को नात कहते हैं।

१. अस्तित्व, २. अमानत की रक्षा करने वाला, ३. सृष्टि का प्रारंभ, ४. भूमि, ५. मान, ६. अनुयायी, ७-८. कुरान की कुल ११४ सूरतों में से, ९. प्रार्थना, १० प्रतिष्ठा, ११. एक पैग़म्बर जिन्हें मूसा भी कहा जाता है, १२. मेराज की रात।

जहे शर्फ़े उम्मत के तलक़ीन[1] सूँ,
हुवे हैं मुशर्रफ़ इसो दीन सूँ।

खतम है जे नाते नबी मुज्तबा,
जे औलादे आले नबीउल[2] हुदा।

दरुद तुज उपर हौर तेरे आल पर,
सहाबिया पे तुज हौर तेरे चाल पर।

सो हजरत के बाद अज़ हुवे चार यार,
इसी चा़र ते दीन है बरक़रार।

तेरा नात कहने सकत किस अहे,
समज कर जो तेरा सना कोई कहे।

खतम है मुक़ीमी ब नाते नबी,
तु कर याद अब चार यारों को भी।

---

१. शिक्षा, २. रास्ता बताने वाला पैग़म्बर।

दर मनक़बत चहार यार किबार*

अवल मदहा बोलं मैं सिद्दीक़[1] का,
वो साहब अहे महज़ तसदीक़ का।

यों सिद्दीक़ तईं दीन रौशन हुवा,
उन्हों सूं जहाँ भी यो गुलशन हुवा।

उन्हों बाद अज़ाँ हैं उमर[2] नामदार,
हुवा दीन सगला भी लै उस्तवार[3]।

अदल में नहीं कोई सानी उसे,
नबी ने कहे यारे जानी उसे।

उन्हों बाद उस्मान[4] साहब तमीज़,
कि है भोत प्यारे नबी के अज़ीज़।

किये ज़मां फ़ुर्क़ान[5] इर्फ़ां[6] के तईं,
हुकम हक़ नबी के सो फ़र्मां के तईं।

उन्हों बाद हैं शाहे दुलदुल[7] सवार,
शुजाअत अली[8] को है दो जग थे बार।

---

* महात्माओं का यशोगान।

१. पहले खलीफ़ा, २. दूसरे खलीफ़ा, ३. मज़बूत, ४. तीसरे खलीफ़ा, ५. धार्मिक ग्रन्थ, ६. ज्ञान, ७. हज़रत अली, ८. चौथे खलीफ़ा।

अली हैं जो ग़ाज़ी कमालत मने,
फ़साहत[1] मने हौर बलाग़त[2] मने।

जिगर हैं मोहम्मद के यो चार यार,
जिन्हें फ़र्क़ देखा सो अहमक़ शुमार।

जो कोई उन चारों ते मुनकिर अहे,
वो लाशक मोहम्मद सते दूर अहे।

ख़तम है ब नाते नबी मुज़्तबा,
बर औलाद व आले नबीउल हुदा।

---

१. सरल भाषा, २. आलंकारिक शैली।

दर सिफ़ते बादशाह सुलतान अब्दुल्ला*

मुक़ीमी तू कर सिफ़त[1] शह का इता,
जिनें तुज कूं रौशन किया है इता।

जो सुलतान अब्दुल्ला है शह गँभीर,
शमस[2] - क़म्र ते इसका रौशन ज़मीर।

कि अद्ल हौर इन्साफ़ हौर दाद का,
ओ है बादशाह हैदराबाद का।

अमन में खलक इसके परतो तले,
जो सारे दकन में दुराई चले।

दखन में यो क्या बल्कि है हिन्द में,
अहे नाम इसका तो भी सिन्द में।

दखन के शहाँ में गिरामी है ओ,
गिरामी अहे हौर नामी है ओ।

दखन के शहाँ देख फिर यूँ कहे,
मोहम्मद क़ुली फिर को आया अहे।

---

* सुलतान अब्दुल्ला की तारीफ़ में।

१. तारीफ़, २. सूरज-चाँद।

मोहम्मद क़ुली भी शहाँ किस शुमर में,
सो हातिम सा शाह इसके नित उम्र में।

ज़हाँक़[1] हौर फ़रीदून[2] -सा शेर ओ,
करे पल में कई दुश्मनाँ ज़ेर ओ।

है ऐसा सो ओ बादशाह बेबदल,
दखन के शहाँ में है ओ अतअवल।

मुक़ोमी सिफ़त शह की कर तूँ तमाम,
इता तूँ क़िसा का बना कर क़लाम।

१. तथा, २. ईरान के दो प्राचीन शाहों के नाम।

बयान इब्तदाये इश्क़ व तालीफ़े किताब*

इता सुन कता हूँ खुलासे की बात,
धर्‍या हूँ जो दिल में लगन के सँगात।

दुनिया में बड़ा है पिरत का रतन,
पिरत बिन नहीं कोई खाली जिवन।

पिरत को बनाया है करतार वो,
पिरत सुंइच संवार्‍या है संसार वो।

खुलासे में सबके पिरत है अवल,
पिरत बिन नहीं कोई दूजा फ़ज़ल[1]।

पिरत बिन इशख़ कइँ उपजता नँईं,
कि मरना वो जीना समजता नँईं।

पिरत बींज दाना[2] दिवाना करे,
पिरत ने बेगाना यगाना करे।

पिरत जीवु सूं हाथ धोती अहे,
पिरत नेह के बीज बोती अहे।

---

* वर्णन प्रेम के प्रारंभ होने का और लिखना किताब का।

१. कृपा, २. बुद्धिमान।

पिरत की नदी नित उबलती अहै,
पिरत सुंइच दुनिया यो चलती अहे।

पिरत के दरिया का शिनावर[1] हूँ मैं,
पिरत केंइच ग़ोते में यावर[2] हूँ मैं।

कमन्दे पिरत बीच सँपड़्या हूँ मैं,
मुक़ीमी पिरत सोंच अकड़्या हूँ मैं।

पिरत की भटी पड़के जिस ठार है,
वफ़ा के सदर का वो सरकार है।

अथा यों जो दिल में जो उनमें मिलूँ,
पिरत मद सूँ माता रज़ामंद चलूँ।

अपस सेइच मिलिया आके एक यार मुज,
वफ़ादार दिलयार दिलदार मुज।

पिरत मेंइच उसके पिरत जोश हो,
रह्या मिल मोहब्बत में मदहोश हो।

क़िसा मुज पिरत का कह्या एक उन,
जो बिसरे तो लैला व मजनू को सुन।

हुवा दिल पो यूँ कर तफ़क्कुर[3] क़रीब,
कहूँ शेर मोज़ूं हिक़ायत अजीब।

बचन दुर हो दिल थे उबलने लगे,
नवे तर्जेखुश[4] तब निकलने लगे।

---

१. तैराक, २. पोषक, ३. चिन्ता, ४. सुन्दर शैली।

व इन्साफ़ दादने शेर व तरतीब कर्दने सुख़न*

ज़बाँ का इता हूँ सचा जोहरी,
करूँ नित सुख़न सूँ गुहर[1] गुस्तरी[2]।

क़िसा यक कहूँ मैं गोहरबार[3] का,
सो चन्दरबदन हौर महयार का।

सुने कोई मुजको दुआ याद कर,
रहेंगे तआज्जुब सूँ दिलशाद कर।

ततबवो[4] ग़वासी का बाँदिया हूँ मैं,
सुख़न मुख़्तसर ल्याके साँधिया[5] हूँ मैं।

इनायत जो उसकी हुवी मुज उपर,
यो तब नज़्म क़िस्सा किया सरबसर।

वले मैं अपस कूँ सराया नहीं,
कि मैं शेर किसका फिराया नहीं।

सराना फिराना नन्हाँ काम है,
करे उन अमल यो कि जो ख़ाम है।

कि शेर का तलाज़ुम गोहरदार[6] है,
सँवरना तबीयत को नाचार है।

---

* करना शेर के साथ न्याय और रचना कविता की।

१. मोती, २. करने के अर्थ में, ३. मोती बरसाना, ४. नक़ल, ५. जोड़ः
६. मोती रखने वाला।

दर शुरू नमूदने क़िस्सा*

सो चन्दरबदन हौर महयार का,
कहूँ एक क़िस्सा गोहरबार का।

बिना इस क़िसे का सुनो ऐ अज़ीज़।
नज़ाक़त में मौज़ूं सुख़न[1] बातमीज़।

सुन्या हूँ कि कहते हैं सुन्दरपटन,
अथा राज वां एक हिन्दू बरन।

कि राजा में ओ राज जगराज था,
कितक मुल्क का उसकूं ख़ुशबाज था।

अथे भोत कैरां वां एक दैर[2] था,
परस्तिश[3] कूं वां सब बशर[4] सैर था।

करे राज पूजा इसी देव का,
तमाशा अजायब दिसे शीव का।

किता सब शहर का उसे ठार था,
कि गोहर वहां भोत अम्बार था।

---

* होना क़िस्से का प्रारम्भ।

१. शायरी और बात, २. मन्दिर, ३. पूजा, ४. आदमी।

ख़ज़ीने के मक़ज़न[1] बसा हौर थे,
सभी गंज वाँ नौरतन के अथे।

न बेटा उसे एक बेटी अथी,
कि तन पर रतन सब समेटी अथी।

अथी ख़ूबसूरत में ज्यूँ शहपरी,
व लेकिन परी सूँ अथी बरतरी।

लताफ़त[2] में मौज़ूं व शीरी सुख़न[3],
अथा नाँव उसका सो चन्दरबदन।

चितारी[4] क़ज़ा[5] का जो उतर्‌या अथा,
कि सूरत अजायब वो चितर्‌या अथा।

वो को नँईं तो वैसा मुसव्विर कहाँ,
चितरने कौं सूरतपरी के यहाँ।

चंचल मद की माती नज़ाक़त की धात,
फिरे नित हमेशा सहेलियाँ सँगात।

गरब नाज़ माती वो फिरती अथी,
कि उस देव पूजा वो करती अथी।

थी महबूब आलम की वो गुलबदन,
कि चन्दर जिसे देख करता सरन।

बरस एक बाद अज़ को जतरा वहाँ,
भरे ख़ल्क़ आवे सो लाखाँ वहाँ।

---

१. भण्डार, २. कोमलता, ३. मीठे वचन बोलने वाली, ४. चितेरा, ५. प्रकृति।

सो कई जिन्स बाज़ार के रंग क्याँ,
हरेक ख़ुशनुमा होर ख़ुश अंग क्याँ?

लिकावे कितक जिन्स औतार वाँ,
मंगे जो देखे सोय हर इक वाँ।

अपस वज़ा बाज़ार हर ठार था,
चपा रास्ता हुस्ने गुलज़ार था।

दर तारीफ़े महयार गोयद*

दुजा कइं शहर में अथा बख़्तवर[1],
तिजारत में फ़ाज़िल वो साहब हुनर।

किते ज्ञानवन्तां अदिक बेमिसाल,
धरे एक फ़र्जन्द साहब जमाल।

सगल तरबियत[2] सेती हुशियार कर,
रख्या नाँव उसका सो महयार कर।

हुनर हौर फ़िरासत[3] में कामिल अथा,
फ़साहत बलाग़त में फ़ाज़िल अथा।

वले इश्क़ दिल पर था हायल बहुत,
अथा ख़ूबसूरत था मायल बहुत।

परम बास हर कइं की सूंगता अथा,
ख़ुदा पास दिलवर कूं मँगता अथा।

इलाही मुजे ख़ूबसूरत दिखा,
परम का पियाला सदा मुज चखा।

---

* महयार की तारीफ़ में।

१. भाग्यवान, २. प्रशिक्षण, ३. बुद्धिमानी।

एकाएक रहमाँ हुवा मेहरबाँ,
दिया उसकूं माशूक़ का वें नशाँ।

सूंग्या बास कइं इस चंचल का उनें,
चंचल अत छबेली निछल का उनें,

सुन्या सोच उसका दिवाना हुवा,
कि आशिक कवाने कूं भाना हुआ।

धर्‌या यूंइच दिल पर के जाऊँ वहाँ,
मगर उस परी कूं तो पाऊँ वहाँ।

फ़िराकी बिरह का हो निकल्या उनें,
बिरह के सदर सर ते चकलिया उनें।

बिरह की सिलग आग मन कूं लगी,
जला मन को कर राख तन कूं लगी।

कि जिस सर बिरह की अगन आ पड़ी,
यकीं है कि मुशकिल उसे सर खड़ी।

कि जिस सर बिरह को अगन है सही,
जलेगा तो आशिक हमेशा वही।

इशक़ का मरातिब[1] किसे फ़ाम[2] है,
कि आशिक कवाना कठिन काम है।

बिरह की बला यो अजब है बला,
कबल इस बला कौंनती है बला।

---

१. मर्तबा, २. जानकारी।

हरेक कोई आशिक कवाता अहे,
वले इस कहाँ फ़न यो आता अहे।

कहाँ यो हिक़ायत[1] कहाँ मैं ढ़ल्या,
बचन का तगावर[2] कहाँ ले चल्या।

---

१. क़िस्सा, २. तेज दौड़ने वाला घोड़ा।

बयाने रसीदने आशिक़ व मुल्के माशूक़ व शेफ़्ता शुदन बर आँ*

कि आशिक़ सिफ़त वो जंगल तीर कर,
इकाइक आया उसी दैर पर।

क़ज़ा देखो लायी कहाँ ते कहाँ,
उसी देस जतरा भर्‌या था वहाँ।

देख्या आ तमाशा किते धात का,
मिल्या था खलक़ भोत कई भाँत का।

कि फिरता अथा देखता चौकदन[1],
खबर हुई कि आती है चन्दरबदन।

सुन्या वाँ चंचल का गया ग़ुलबुला[2],
गया ग़ुलबुला हौर उसी सर बला।

खड़े लोग सारे तमाशे बदल,
कि आती अहे वो छबेली नवल।

यकायक वो आके निकली वहाँ,
बला इस हुवी ज्यों बला नागहाँ,

---

* पहुँचना आशिक़ का माशूक़ के मुल्क को और होना उस पर आशिक़।
१. चारों ओर, २. शोर।

कि देख्या उसे ज्यूं वफ़ादार ओ,
हुवा वँइच आशिक़ कि यक बार ओ।

सिलग आग बिरहे सूँ जलने लग्या,
अक़ल होश तनसूं निकलने लग्या।

नज़िक जाके बोल्या कि सुन ऐ परी,
मुजे तुज लताफ़त दिवाना करी।

दिवाना हूँ तेरा दिवाने के तईं,
अपसते[1] न कर दूर जाने के तईं।

धर्‌या आस तेरी निरासी न कर,
जफ़ा पर मुजे तं करासी[2] न कर।

सो तुज बिन मुजे कोई होना नहीं,
कि बिन जल मछी का सो जीना नहीं।

कता हूँ तुजे मैं कि ऐ गुनभरी,
तूँ करना इता कुच मेरी दिलबरी।

सो यूँ कह अदब सूँ निवड़ कर उनें,
धर्‌या सीस उसके चरन पर उनें।

लकद[3] मार उसकूँ उठी बोल यूँ,
समज कुच अपस कूँ ऐ बेडौल तूं।

हिंदू मैं कहाँ होर तुरक तू कहाँ,
कहाँ राम-सीता मुरख तू कहाँ।

---

१. अपने से, २. निराश, ३. लात।

कहाँ मैं चँदरमा कहाँ तू दिवा,
कुता क्या मुवे तू दिवाना हुवा।

झिड़क बोल उसकूँ वहीं फिर चली,
उठी दिल में आशिक़ के वँईं तलमली।

सट्या[1] दिल सूँ ऐशोज़वानी के तइं,
लगा ख़ाक़ भर मूँ पिशानी के तइं।

बिरह की भटी की लगा राक तन,
सट्या फाड़ कपड़े हुवा चाकतन।

सकल होश तनकी दिवानी हुवी,
देखो ख़ार इसकी जवानी हुवी।

जवानी की ख़ारी बहुत है बुरी,
जवानी को ज़ीनत[2] है ज़ीनत गरो।

बिरह में जल्या सो ज़वांपीर है,
कि मरना व जीना उसे सैर है।

जवानी है माशूक़ दिल की सची
वगर नइं जवानी पिरां[3] की रही।

जवानींच करती है दिल पे सितम,
करे चूके माशूक़ सरता क़दम।

जवानी की दूरी दिवाना करे,
पिछें तन जईफ़ी का भाना करे।

---

१. डालना-फेंकना, २. सजावट, ३. बूढ़े।

कहाँ वो हिक़ायत कहाँ हाल मुज,
कहाँ ओ जवानी कहाँ हाल मुज।

कि आशिक़ यक़ायक़ बिरह का असीर,
लगा ख़ाक़ मूँ कूँ हुवा ज्यूँ फ़क़ीर।

बचन उस मोहन का ज़बाँ पर उनें,
धर्‌या याद सब जा बिसर कर उनें।

बाज़ गश्तने महयार अज़ दैर व सरग़श्ता शुदन*

चल्या यूंइच बकता रवाना हुवा,
कुता क्या मुवे तू दिवाना हुवा।

न देखे नज़र भर कधीं ना किसे,
हुवा पार परबत वो मरना उसे।

सट्या खाना-पानी व सोने कूं भी,
लग्या बोत अलड़ा के रोने कूं भी।

बिरह की अगन नित सिलगने लगी,
जिनों नित बला हो बिलगने लगी।

फ़िराक़ी हो बावल बला सर लिये,
सिना फाड़ दुख सूं जिगर चर लिये।

हो मजनू जंगल मान फिरने लग्या,
वसनतर पकड़ भोत झिरने लग्या।

* आना महयार का मन्दिर के पास और होना पागल।

उफ़्तादने महयार दर शहरे बीजानगर व दिलदारी कर्दन बादशाहे आँ शहर*

कि फिरता चल्या यूँ कितक देस कूँ,
ज़मी काट अँपड़्या[1] वो यक देस कूँ।

यकायक दिस्या शहर यक दूर थे,
सँवारे शहर यक मगर नूर थे,

सो इस शहर का नाँव बीजानगर,
जो है शाह सुलतान फ़ाज़िल ककर[2]।

फ़िराक़ी बिरह का हो निकल्या बहार,
हुवी इसको हासिल देखो क्यूँ वो नार।

न खाता न पीता सो रोता अथा,
कधीं नैन भर सुक सूँ सोता न था।

---

* पहुँचना महयार का शहर बीजानगर और करना वहाँ के बादशाह द्वारा उसकी दिलजोई।

१. पकड़ा, २. कह कर।

दर तारीफ़े शाहे मुल्के दीगर व दस्तगीरी नमूदने महयार*

अथा बादशा वाँ का गुन ज्ञान का,
पुर उपकार शाहाँ में लै[1] मान का।

सखावत[2] में फ़ाज़िल फ़कर दोस्त था,
धरम पर उसे भोत नामूस[3] था।

धरम कूँ धरया था ज़बाँ पर उनें,
धरम का दरिया था सरासर उनें।

अथा पादशाहाँ मने नेक नाम,
वो करता अथा नेकनामी के काम।

क़ज़ा सूँ जो यक दीस वो शहरयार,
कमर बाँध निकल्या सो खेले शिकार।

चल्या ज्यूँ निकल उन शहरयार हो,
तुरंग चड़ तजम्मुल सूँ उस ठार हो।

देख्या उस दिवाने को आता अहे,
कि बकता बचन यूँइच गाता अहे।

"कुता क्या मुवे तू दिवाना हुवा,
दिवाने मुवे तू दिवाना हुवा।"

---

* तारीफ़ दूसरे मुल्क के बादशाह की और सहायता उसके द्वारा महयार की।

१. बहुत अधिक, २. दानशीलता, ३. इज़्ज़त।

नज़िक आ मोहब्बत सूँ हटक्या[1] उसे,
लगा इश्क़ किस पर तूँ अटक्या किसे ?

कहा जा उसे ऐ दिवाने बसर,
कहाँ सूँ तू आया चल्या है किधर।

हुवा है तूँ आशिक सो किस हूर का,
हुवा मुब्तला यूँ सो किस नूर का।

तेरा मन लग्या काँ सो कह तूँ मुजे,
जो माशूक़ तेरा मिलाऊँ तुजे।

तूँ इनसान पर या परी पर फ़िदा,
या ख़ब्ती सो मजनू हो फिरता सदा।

जिता करके पूछ्या सुख़न बासबाब,
वले यक दिया नँईं उसे उन जवाब।

पिछे यूँइच समज्या कियो साफ़ है,
पिरत के बचन का यो सर्राफ़ है।

उसे कुच तमाँ[2] तो दुनिया की नहीं,
व गर है तो ग़ैर अज फ़ना की नहीं।

फिरया वो सवारी ते उस ले सँगात,
मनाता चल्या बात में धात, धात।

हुवा है तू आशिक़ सो माशूक़ पर,
लगाया है मन और महबूब पर।

पकड़ हात उसका चल्या घर के तईं,
मिलाऊँ उसे उसके दिलवर के तईं।

---

१. छेड़कर पूछना २. लालच।

बुर्दने बादशाह महयार रा दर महले खुद नमूदन ज़नाने खुद रा*

जो आया महल में उसे सात ले,
हरम में चल्या हात में हात ले।

मुनव्वर हरम उस रतन चार थे,
रतन चार याने हरम चार थे।

सो हरयक हरम में सहेल्याँ कित्याँ,
अथ्याँ ख़ूबसूरत छबेल्याँ जित्याँ।

सकल छन्द भर्‍याँ ज्यूँ पर्‍याँ दमबदम,
मुकल्लल[1] जरीने में सरताक़दम।

मगर खन रतन ढेर क्याँ दुर जकाँ,
सो ऐसी झलक सूँ अछे बर जकाँ।

जड़त कर सटचा था उनूँ तन सगल,
मगर खन रतन के वहाँ भोत निकल।

---

* लाना बादशाह का महयार को अपने महल में और दिखाना अपनी औरतों को।

१. सजा हुआ।

जित्याँ सब परयाँ वो रतनसार क्याँ,
दिसें फिर रतन सूँ रतनसार क्याँ।

कि शह उस हरम में दिवाने के तँईं,
लिजा कर बिठाया दुवाने के तँईं।

उते सब हरम कूँ बुला कर हुज़ूर,
खड्या कर नज़र तल दिखाया ज़रूर।

वले उन किया नँईं किसी पर नज़र,
अभी वोइच नारी दरूनी भितर।

न उसका किसी सूँ न कुच काम था,
बचन उस मोहन का उसे दाम था।

देख्या शाह जो याँ तो तदबीर नंईं,
पकड़ हात उसका चल्या फीर कँईं।

तलबीदने बादशाह् वज़ीरेखुद रा व फिरिस्तादन दर महले ऊ महयार रा*

बुला पास अपना हुकूमत वज़ीर,
कहया मुन अक़ल के तू दानाँ गँभीर।

मेरे दिल पे यूँ है कि मजज़ूब[1] यो,
अटक कईं गँवाया है महबूब यो।

दुवाना कहीं खूबसूरत का है,
व गर नईं सपन देख मूरत का है।

नियत में रख्या हूँ कि उसकी मुराद,
मुहस्सिल[2] करूँ ताकि होवे यो शाद।

इसी काम बदले हरम के भितर,
लिजा कर दिखाया सबों को सँवर।

वले उन न कीता किसी पर नज़र,
न कीता बचन टुक ज़बाँ खोलकर।

---

* बुलाना बादशाह् का अपने वज़ीर को और भेजना महयार को उसके महल में।

१. ज्ञान-ध्यान में पागल, २. प्राप्त।

व या यो किसी पर भी अटक्या नहीं,
किसे देख को कुच भी हटक्या नहीं।

इता उस लिजा कर तू अपने महल,
दिखा खुश लिखायाँ[1] व शीरीं शकल।

कि शायद किसी सूँ करे बात यो,
सुरत देख अटके किसी सात यो।

क़ुबुल बात कर वो खिरदमन्द वज़ीर,
पकड़ हात उसका चल्या धर के धीर।

सबों को दिखाया हरम में लिजा,
वले उन सट्या नईं अपस का वज़ा।

पिछीं वो हुक़ूमत पनाहे सरीर[2],
कह्या जाके शह कूँ यो रौशन ज़मीर।

यो मजज़ूब की तर्ज़ अजायब दिसे,
सबों सूँ हमेशा तो बेग़र्ज़ दिसे।

---

१. सुन्दर चेहरे, २. तख़्त।

हुक्म करदने बादशाह् वज़ीराँ व अमीराने खुद कि यकयक दरखा़नाहा बुर्द : ज़नाने खुदहारा बैनुमायन्द महयार रा*

हुवा हुक्म शह का वज़ीराँ उपर,
जिते उस शहर के अमीराँ उपर।

हुवा यूँ हरेक पर के अपनी हरम,
लिजा कर दिखाना उसे कर करम।

हरेक 'दीस हरयक लिजाने लगे,
लिजा उस हरम अप दिखाने लगे।

वले उन कहीं कुच न कीता नज़र,
न कीता बचन यक ज़बाँ खोलकर।

वले उन किसी पर न कीता तलब,
खबर वाँ की अपड़ी जो उस शह को तब।

हुवा चूँके शह पर यो ज़ाहिर हवाल,
पड्या नँईं पसन्द उस किसी का जमाल[1]।

---

* हुक्म करना बादशाह का अपने वज़ीरों और अमीरों को कि ले जाकर दिखलाओ महयार को अपने घरों की औरतें।

१. सौन्दर्य।

निदा दादने बादशाह दर शहरे खुद चे हिन्दू चे मुसलमान हमाँ ज़नाने खुद रा बेनुमायन*

दिया हुक्म शह ने ढिंढोरी उपर,
कि जाँ लग ज़नाँ[1] हैं शहर के भितर।

घरेघर लिजा कर दिखाना उसे,
जहाँ लग कि हिन्दू - मुसलमाँ बसे।

बरस एक लग उस लिजाते अथे[2],
जित्याँ[3] खूबसूरत दिखाते उसे।

वत्याँ[4] सब दिखाने दिवाने के तई,
जो देखे दिवाना वो माशूक़ कईं।

वले उन किसी पर भी अटक्या नईं,
अथा जो शरत ओ सो चूक्या नईं।

हुवी जो खबर यो उसे शाह कूँ,
कि नईं अन्त इसकी तलबराह कूँ।

---

* ढिंढोरा पिटवाना बादशाह का कि हिन्दू और मुसलमान अपनी स्त्रियों को दिखलाएँ महयार को।

१. स्त्रियाँ, २. थे, ३. जितनी का बहुवचन, ४. उतनी।

बादहू पुर्सीदने बादशाह मरदुमारा बराये सरंजामे ऊ फ़िरिस्तादन क़ासिद रा*

पिछे शाहे आली करम नाम का,
पुछ्या यो खबर उस सरंजाम का।

दिगर किस मुलक में अगर होय तो,
कहो मुज नशानी अगर होय तो।

जहाँ को अछेगी[1] परी वो मोहन,
अगर दर[2] कुरासाँ[3] व गर दर यमन।

अगर कोई कहे तो लिजाऊँ शिताब[4],
जिलाना उसे मुँज बड़ा है सवाब।

तफ़क्कुर[5] कर इस बात कूँ शह गँभीर,
ढुंढाने दिया भेज क़ासिद[6] कूँ फीर।

---

* पूछना बादशाह का लोगों से उसके अंजाम के लिए और भेजना संदेश-वाहक को।

१. रहेगी, २. में, ३. ईरान के एक शहर का नाम, ४. जल्दी, ५. चिन्ता, ६. संदेशवाहक।

जवाब दादन पीरे सय्याह् अज़ मुल्के माशूक़ ऊ बादशाह् रा*

अथा कोई शह कन कुहन सैर का,
जो पूछ्या खबर इसकूँ उस दैर का।

ज़मीं चूम बोल्या कि ऐ तिरपति,
कि यक राज हिन्दू है रँगरापति।

उसे एक बेटी है चन्दरबदन,
कि चन्दर जिसे देक करता सरन।

परी भी इती कईं नुरानी नहीं,
सुरत में उसे जोड़ सानी नहीं।

जवानी में है आज ओ मदमती,
है महबूब सबमें ओ रम्भावती।

यूँ ख़ूबाँ[1] का सरदार इसकूँ किया,
दुन्यां में की ख़ूबी उसे सब दिया।

---

* जवाब देना बूढ़े घुमक्कड़ का बादशाह को माशूक़ के मुल्क से।
१. महबूबों का।

है सुन्दरपटन नाँव उस शार का,
ना अछ से कहीं शाह उस सार[1] का।

बड़ा एक नगर वाँ है सुन्दरपटन,
चँदर उस नगर की है चन्दरबदन।

कि है देव यक उस नगर में मशूर,
पुजे को परी ओ सो आवे ज़रूर।

अगर यो दिवाना जो जावे वहाँ,
यक़ीं है कि पावे दिल उसका नशाँ।

---

१. सरीखा।

शुनीदने बादशाह् बज़बाने पीर ख़बरे मुल्के माशूक़ ऊ रवानाशुदन बा सरंजाम खुद मै महयार*

सुन्या शाह जब यो वहाँ की खबर,
लिया सात अपने कितक मुख़्तसर।

ख़ज़ाना किता हौर दिवाने के तईं,
रवाना हुआ शह लिजाने के तईं।

वही कूँच पर कूँच जाने लग्या,
ओ हरयक नगर कूँ पिछा ले गया।

हरयक शहर में जा पुछाने लग्या,
सो खूबाँ वहाँ क्याँ दिखाने लग्या।

कि ओ शहर तो कईं सपड़ता[1] नहीं,
यो मक़सूद[2] कूँ कई अपड़ता[3] नहीं।

न किस कूँ दिवाना पछाने किदर,
अगर हूर ते कोई अछे खूबतर।

हुवा शाह फिर-फिर बहुत पशेमाँ[4],
न उसका कहीं होवे खातिर निशाँ।

---

* माशूक़ के मुल्क के बूढ़े से खबर सुनना बादशाह का और रवाना होना महयार के साथ।

१. मिलना, प्राप्त होना, २. उद्देश्य, ३. पकड़ना, ४. शर्मिन्दा।

रसीदने बादशाह ब मुल्के चन्दरबदन व वस्ल नमूदन महयार ब ऊ*

कितक दीस बाद अज़[1] ज़मीं सैर कर,
रह्या शाह आकर उसी दैर पर।

जो उतरचा सो उस शहर के आ नज़ीक,
दिवाने के दिल कूँ धड़क हुई अदीक।

दिवाने को ज्यूँ टैर दिसने लग्या,
खुशी हो अपस मन में हँसने लग्या।

समज शाह दिल में पछान्या वहाँ,
कि मतलूब[2] इसका है हासिल यहाँ।

नज़िक शहर के जाके कीता मक़ाम,
किया शाह ने उस दिखाना तमाम।

निकल उठ चल्या शह दिवाने कूँ ले,
उसी ठार ल्याया दिखाने कूँ ले।

---

* पहुँचना बादशाह का चन्दरबदन के मुल्क को और मिलना महयार का उससे।

१. से, २. वांछित।

कि जिस रोज़ कूँ शह यो पहुँचा अथा,
उसी रोज़ भी वाँ पो जतरा अथा।

हुवा वक़्ते पूजा उसी दैर का,
दुजा ग़ुलबुला उस परी सैर का।

लगी फ़ौज दरसन निपट गाजने,
ख़ुशी सूँ दिवाना उठ्या नाचने।

कि शह बैठ वाँ एक नद पर कन्दर,
खया भेजना एक हाजिब[1] सुघर।

बुलाया सो हाजिब को शह नेकनाम,
कहो जाके राजे को मेरा सलाम।

कि है राज रायाँ केरा[2] राज तूँ,
नहीं मुल्क में जोड़ तुज आज कूँ।

ज़माने में तुज जोड़ सानी नहीं,
ज़मीं पर तो तुजसार ज्ञानी नहीं।

पुर उपकार ज्यूँ बिक्रमाजीत है,
सो उस तें बड़ा तूँ महाजीत है।

है दुनिया में ख़ुश तेरी औतारगी,
सोहें जग में तुजको यो चौसारगी[3]।

हिंदु राज में ज्यूँ के इन्दर अहे,
मुसलमान में ज्यूँ सिकन्दर अहे।

---

१. बादशाह का नोकर, २. का, ३. हुशियारी।

उनूँ शहर है ख़ूब तेरे बुनियाद,
अगर रहम में ठैर उनों ते ज़ियाद।

उनूँ के ज़माने के लोगाँ मने,
ज़ियादा दिसे उस मुलूका[1] मने।

अवल के ज़माने के लोगाँ मने,
ज़ियादा दिसे उस मुलूका मने।

अवल के जो लोगाँ अथे यूँ निधान,
अग़स के जो फरजन को देते थे दान।

करूँगा अरज मैं तो देना मुजे,
सुनेगा अगरचे सकत है तुजे।

सो बख़्शू तुजे सल्तनत है जितो,
कवाऊँ बंदा मैं तेरा ख़िदमती।

कि होना तो सब मुल्क ले राजयो,
कि बख़्शू तुजे तख़्त हौर ताजयो।

सुने तू अगर बात मैं हूँ गुलाम,
कि हतजोड़ ख़िदमत करूँ मैं मुदाम[2]।

कि ये वज़ा सेतो सराकर उनें,
दिया भेज हाजिब कूँ राजे कने।

यो सब बोल बात अज़ तू इतनाइच बोल,
कि धरता अहे तू जो बेटी अमोल।

---

१. बादशाहों में, २. हमेशा।

सो रम्भावती कूँइच तू दान दे,
ओ बेटी मुजे देके बेटा यो ले।

सो महयार बेटे सूँ कर कार क़ेल[1],
कि ज़ाहिर दिसे इस हक़ीक़ी में मेल।

कि महयार कन ले ग़ुलामी का ख़त,
कि फ़रज़न कवावे सो है उसके बख़्त।

अदब सूँ नज़िक जाके बोल्या उसे,
ज़बानी कया शह सुनाया उसे।

---

१. बड़ा काम।

फ़िरिस्तादने हाजिब बादशाह व नज़दीके पिदरे चन्दरबदन*

सुन्या सोच राजे ने वँईं दंग हुवा,
हुवा क़ब्ज़[1] ज्यूं रूह जीता मुँवा।

कि तक वक़्त बाद अज़ खबरदार हो,
कि सुन हाजिबे नेक गुफ़्तार यो।

तू कह जा इता शह कूं मेरा सलाम,
कि जिसकी ज़बां थे है इतना क़लाम।

कि तारीफ़ तूं शह की बोल्या जितो,
वो तेरी ज़बां नईं सो मेरी अथीं।

बुज़रगां जो हैं सो बुज़रगी धरें,
कमीने कूं यूं सरफ़राज़ी[2] करें।

मदद तेरे सर पर सूं हजरत अली,
मदद शाह तुजकूं है जुमलावली।

---

* भेजना बादशाह का हाजिब को चन्दरबदन के शहर के नज़दीक।

१. निकलना, २. देना।

तूँ साहब जहाँ का है साहब कमाल,
जो तेरा फ़ज़ीलत[1] है दोजख उजाल।

तूँ ऐसा जहाँगीर ऐ नेकनाम,
सिकन्दर का है तख़्त तेरा मुक़ाम।

कि इस वक़्त होवे सिकन्दर अगर,
सो बूजे तेरे मरतबे का क़दर।

सो मुज पर ग़ुलामी भी साबित हुई,
तू सुलतान मेरा सचा ग़जनवी।

ग़ुलामी में हिन्दू हूँ कमतर ग़ुलाम,
तेरे सात फिर मैं करूँ क्या क़लाम।

बँदा मैं कमीना हूँ रँगरापति,
करँव जीव अपना फ़िदा तुज पोति।

मुबारक़ तुजे तख़्त होर ताज़ वो,
कि होना तो सब मुल्क ले राज यो।

कि तारीफ़ करने नहीं मुज ज़बाँ,
ख़ुदा का वली तू अहे बेग़ुमाँ।

जो कुच तू कह्या सो दुनिया की रसम,
वले हमको दुनिया में हिन्दू जनम।

वले क्या करूँ मैं कि परज़ात वो,
कि होता है मुज सर पे आघात यो।

१. बड़ाई।

लिख्या है हमारा सो हिन्दू जनम,
मुसलमान को क्यों हो हिन्दू हरम।

मुसलमान के घर में हिन्दू की जाई,
कि औरत-मरद होवे ज्यूं भाई-भाई।

सुनेंगे जो इस बात कूं राज कोई,
न करसे मुलक में मेरा लाज कोई।

करेंगे मलामत मुजे लख-हज़ार,
तू जाकर इता शह कं कह यूं विचार।

सो यो काम राजा अपीं क्या किया,
मुसलमान कूं डर के बेटी दिया।

किया भी मनत शाह इस धात सूं,
वले यो न होसे मेरे हात सूं।

अगर मन में है तो हमन सबको मार,
दया दिल में का काड़ सट यो विचार।

जो मारे तो राज़ी हूं बख़्शूं मैं ख़ूं,
व या बात ऐसी न करना ज़बूं।

कि ज्यूं आये हो त्यूंच फिरना भला,
यो अहसान मुज सर पे धरना भला।

व या मैं कहूँ क्या कि परज़ात है,
हिन्दू जन[1] से मिलना तुरक घात है।

रजा देख पूरा किया यूं क़लाम,
चल्या फिरके ज्यूं हाजिबे नेकनाम।

---

१. औरत।

५

मराजे अते क़ासिद*

जो कुछ तू हक़ीक़त सुन्या था उनें,
ज़बानी कह्या खोल शह के कनें।

जो हाजिब कह्या बात शह सात मिल,
सुन्या शाह ने सो रह्या हो फजिल[1]।

कह्या अब करूँ क्या मिनत सब सरी,
रहो उस दिवाने सूँ फ़िक्र अब मेरी।

कह्या शाह क्या फिर के जाना इताल[2],
खलक़ कूँ सो क्या मुख दिखाना इताल।

सटूँ बादशाही फ़क़ीरी लिबास,
फ़ाकर होके बैठूँ दिवाने के पास।

दिवाने सूँ भी मैं दिवाना हुवा,
कि सौगन मुजे फिरके जाना हुवा।

मुलक माल फ़रजन्द छोड़ूँ अयाल[3],
हो जोगी फिरूँ इस दिवाने दुँबाल[4]।

---

* लौटना सन्देशवाहक का।

१. शर्मिन्दा, २. अब, ३. औलाद, ४. पीछे।

सटं ऐशो इशरत दिखाने के तें,
कि ये बिन सरन्जाम जासूं न मैं।

जो हाजिब देख्या शाह को बेक़रार,
ज़मीं चूम बोल्या कि ऐ ताज़दार।

नजिक आको बैठ्या अदब के रविश[1],
कह्या तुज ना यॉ आशना कोई ख़ेश[2]।

नहीं कोई तुज कूँ नसीहत करे,
सबब क्या जो बेहूदा ग़म में मरे।

इसी के बदल यो मलामत किया,
न यूँ कोई तरसे तूँ ऐसा किया।

नसीहत सबों को करनहार तूँ,
तबा अक़्ल का लै धरनहार तूँ।

सो ये तर्ज़ की बात कर शह कने,
नहीं कोई तुजसा ज़माने मने।

अगर कोई अछेगा मोहिब[3] व हबीब[4],
फिरा कर न लिख से किसी के नसीब।

तू इस हक़ पे तदबीर लै कुच किया,
वले उसके बख़्तां सूं कुच नंईं हुवा।

क़िसी के उपर हुक्म क्यूं कर चले,
दिवाने की सुहबत दिवाना करे।

---

१. तरीक़ा, २. ख़ुद, ३. प्रेमी, ४. प्रेमिका।

न कोई कमअक़ल फ़िक्र ऐसो करे,
दिवाने बराबर दिवाना फिरे।

सो लख आक़िलाँ में तुजे अक़्ल है,
तुजे याद ऐसी किती नक़्ल है।

कि ये रंग कियाँ मोतियाँ नको बाँद ले,
किसी के बदल तूँ नको शाँद[1] ले।

दिवाने को ले साथ आया इधर,
तू क्यों छोड़ फिरता है अपना नगर।

शहर है अकेला खलक़ मुन्तज़िर,
तू याँ बैस[2] करता है क्या-क्या फ़िकर।

क्यूँ आकास का चाँद हात आयगा,
झुठा हो पशेमान पछतायगा।

सो यारी के हक़ में ऐसे यार काँ,
कि तुज सार का भी खबरदार काँ।

फिऱ्या सात तूँ भात दिलगीर हो,
कि सब ज़िन्दगानी सतो हात धो।

वो यूँ बोल भेजा है हाजिब गया,
शहंशाहे आदिल ने सुन चुप रह्या।

१. प्रतिशोध, २. बेठ।

मुलाक़ात कर्दने महयार व चन्दरबदन व मुर्दने आशिक़*

देखो काम अल्लाह के ऐ अज़ीज़,
मिलाता है क्यूं ल्या अज़िज़ सूं अज़ीज़।

इसी फ़िक्र में फिर बरस भर हुवा,
वो जतरा कूं जतरा बरस भर हुवा।

हुवा वक़्ते कूचा उसी दैर का,
दुजा ग़ुलबुला उस परी सैर का।

लगी फ़ौज दरसन निपट गाजने,
खुशी सूं दिवाना उठ्या नाचने।

यो बातां कते हैं तिलक[1] एक बार,
खबर हुई जो आती है चोसार[2] नार।

यकायक जो निकली वो घर ते बहार,
लटकती[3] जो आयी आपीं ग़ुल अजार।

मिल्या था खलक़ हौर भर्या था बज़ार,
खड़े देखने कूं हज़ारां हज़ार।

---

* मुलाक़ात करना महयार का चन्दरबदन से और मरना आशिक़ का।

१. तक, २. चतुर, ३. नाज़ो अदा से चलना।

बहुत आशिक़ाँ इश्क़ में ताक़[1] हैं,
उसे देखने भोत मुश्ताक़[2] हैं।

सो महयार भी उनमें शामिल अथा,
कि सब आशिक़ाँ में वो कामिल अथा।

रहे मस्त वो आशिक़ा में सदा,
करे जीव उस नार पर ते फ़िदा।

पड़्या सोंच कुछ सुध न कुछ ध्यान था,
सो रों रों में उसके वही ध्यान था।

अवल सूँ दिवाना अथे यार के,
अथे मस्त देखन वो दीदार के।

दुनिया में खुशी यो है खुशतर गुलाल,
कि आशिक़ को माशूक़ का होय विसाल[3]।

लजत उस खुशी का उसेच फ़ाम[4] है,
कि जिस सर बिरह का कठिन काम है।

कि ज्यूं नाजमाती वो चन्दरबदन,
निकल आयी उस दैर पूजा करन।

देखत उस परी को दिवाना वले,
पड़्या दौड़ कर जा वो क़दमाँ तले।

हुवा मस्त जब देख गिरने लग्या,
पकड़ पाँव प्यारूँ सँ पड़ने लग्या।

---

१. माहिर, २. रुचि, ३. मिलन, ४. ज्ञात।

नयन दिल के ओ उसकूँ देखन लग्या,
गिर वो पग की नयना सूँ पूँछन लग्या।

दिवानी अथी दिल में वो गुलबदन,
जो देखी के आशिक़ ने पकड़्या चरन।

जो देखी सो फिर इश्क़ का जोश हो,
कि सब होश इसते फ़रामोश हो।

कि ज्यूँ वो छबीली चंचल ने देखा,
हुवा मुब्तिला पन अपस सुध रखा।

वले शर्म सूँ नई दिखाई जरा,
न ज़ाहिर किती कुछ उनें मूं फिरा।

दरूनी में जलती वो चालाक़ थी,
वले सुद रखी थी अपस चाक थी।

वो जलने लगी इश्क़ के धगमने[1],
सो ज़ाहिर दिखाई अपस जगमने।

हंसी म्याने माकर छुपायी उनें,
न उस नार का भेद पाया किनें।

ज़बां खोल बोली कहर के रमूज[2],
"जिता है दिवाने मुंवा नई हनूज[3]।"

परी जो पछानी उसी बाँव[4] कूँ,
कि आशिक़ सचा था वो मुज नांव कूँ।

---

१. जलन, २. भेद, ३. अभी तक, ४. बावला।

मुलाक़ात तुज-मुज हुवा इक बरस,
भो आया है इस ठार तू धर निरस।

सुन्या जब बचन यो उनें कान धर,
ख़बस हो चल्या रूह असमान पर।

जो देखो मुंवा करके चन्दरबदन,
चली उठ वहाँ सं अपस धर कधन[1]।

जो देखी तो उस ग़म ते जलती चली,
शरम सूं खलक़ के वो गलती चली।

वहीं थरथराती चली घर भितर,
सो रोने लगो उसके तईं याद कर।

जल्या दूख सूं ग़म का दरूना तमाम,
रखो यूँ छुपा कर ना हुई किसकूं फ़ाम।

वो आशिक़ अथा मुज सतो धर ग़रज़,
मैं माशूक़ उसको रही बेग़रज़।

अबस[2] बात पर मुज दिया जोव को,
कि उस बाज इता मैं रखूं जोव को।

इता जिवु रखे सो बड़ी बेशरम,
कि सच आशिक़ाँ में नहीं यो धरम।

हँसे भोत दिन अब सो रोना भला,
सो जागे बहुत अब सो सोना भला।

---

१. ओर, २. व्यर्थ ही।

न था फ़ाम मुजको भरेगा ककर,
कि पत्थर सटी मैं अपस पांव पर।

हंसी भोत मैं अपसो रोना जनम,
सो जा खाक़ में अब सो सोना जनम।

कहे आशिक़ाँ पर यो क्या घात है,
नहीं घात यों वस्ल की रात है।

सो उस नार पर दर्द कारी हुवा,
दुख उसके मरन का सो भारी हुवा।

सो आशिक़ मुंवा कर वो दुख में जली,
सो जलने से ना ताब ल्या तलमली।

मुक़ीमी बचन का तुरँग स्वार तूँ,
बिसर काँ चल्या है तूँ महयार कूँ।

भर्‌या आशिक़ी का जो बाज़ार आज,
किया बिरहा सेतीं यो तकरार आज।

शहीदाँ मने यो मुशर्रफ़[1] हुवा,
कि माशूक़ कूँ देख आशिक़ मुंवा।

देख्या शाह ने ज्यूं के आशिक़ मुंवा,
जो देख्या सो उसकूं तआज्जुब हुवा।

अजब पाक हौर साफ़ था दिल मने,
दिया जीव यारी की मंजिल मने।

---

१. मान देना।

मगर जीव मुठी बीच पकड़्या अथा,
वा कुछ जीव देने बार ल्याया न था।

कि शह देख उसकूँ बुरा मान कर,
अँछू लाइया दुख के नयना भितर।

कह्या बादशा बाद अज़ाँ ऐ अज़ीज़,
मशक़्क़त तो मेरी हुवी कुछ नाचीज़।

जो मैं लेके तुज कूँ सो फिरता अथा,
तूं माशूक़ का ध्यान धरता अथा।

कहा यूँ कि ऐ यार तू क्या किया,
कि यारी की खातिर अपस जिवु दिया।

तुजे ले फिर्या शहर हौर गाँव मैं,
न देख्या अथा धूप हौर छाँव मैं।

बरस एक बाद अज़ शहर आइया,
तुजे ल्याके माशूक़ दिखलाइया।

तूँ याँ लग सो आकर न पाया मुराद,
हमारे सो दिल को किया नइँ तू शाद।

जो इतने में एकबारगी गुल हुवा,
कि माशूक़ को देख आशिक़ मुंवा।

उठ्या वइँ खलक़ का वहाँ गुलबुला,
कि आशिक़ दिया जीव याँ तलमला।

देख्या शाह ने उस दिवाने के तइँ,
फ़ना हो पड़्या तन बहाने के तइँ।

कह्या इश्क़ उसका अजब पाक था,
जिते जिवु वासिल[1] हो चालाक़ था।

हरेक कोई आशिक़ हुआ है सही,
वले है नज़ाक़त में कामिल यही।

कहाँ इश्क़ इतना जो हासिल करे,
करे तन फ़ना जीव वासिल करे।

सच्चे इश्क़ का पन्थ मुशकिल बहुत,
धरे सर बला पर तो कामिल बहुत।

बला सोसना[2] कुछ सहल काम नईं,
फ़ना बिन उसे कुछ सरंजाम नईं।

परम की नज़ाक़त किसे फ़ाम है,
कि आशिक़ कवाना कठिन काम है।

मुसीबत कुबूले तो कर आशिक़ी,
व गर नईं तो आशिक़ कहाँ फ़ासिक़ी[3]।

बिरह के रयन को उजाला कहाँ,
कठिन रात जागे उताला कहाँ।

बुरा मान यूँ शाह अफ़सोस कर,
सुन्या फिर के आया सो ना सोसकर।

सिने में ते ज़ाहिर जो आया उबाल,
सो रोने लग्या शह अँछू ढाल-ढाल।

---

१. मिल जाना, २. सहना, ३. बुरा काम करना।

चल्या ज्यूं जनाज़ा उधर ले चले,
रह्या फिर अटक उस महल के तले।

हुवा शोर यकदम ब यकबारगी,
कि अटक्या जनाज़ा सो उस ठार भी।

सुनी यो खबर ज्यूं के चन्दरबदन,
कि अटक्या जनाज़ा अपस घर कधन।

सो छुपकर छजे पर हुवी स्वार वो,
तमाशे बदल आ खड़ी नार वो।

खबर सुन अजायब यो रंगरापति,
निकल भार आया तजम्मुल सति।

हुवी देख हैरां खलक़ भोत यूं,
कि क़ुदरत सूं अटक्या जनाज़ा सो क्यूं।

देख्या शाह तदबीर चलता नहीं,
जनाज़ा यहां ते निकलता नहीं।

बज़ां बोल भेज्या सो राजे के पास,
सलाम हौर हक़ीक़त बदस्ते खवास।

कि अटक्या जनाज़ा छजे तल हुज़ूर,
उसे दफ़न करना हमन पर ज़रूर।

वले यो यहां ते निकलता नहीं,
क़ज़ा यो किसी पर समजता नहीं।

ग़ुमा है हमन पर कि चन्दरबदन,
करे कुछ हुनर तो यो पावे दफ़न।

उसे देख देवल में आकर उनें,
"मुँवा नईं कहो तो मुंवा है उनें।

दोनों बीच क्या था सो ज़ाहिर अवल,
हुवा नईं हमन पर कहीं कुछ दखल।

अपे आप आकर जनाज़ा यहाँ,
अटक कर रह्या है लिजाना कहाँ।

करो कुच फ़िकर सच अंदेशो तुमीं,
जो इसको यहाँ थे लिजावें हमीं।

कहा जाके क़िस्सा यो पूरा नवल,
सुन्या ज्यूं दोनों कान धर हो खजिल[1]।

कहाँ ज्यूं के सारा यो क़िस्सा खवास,
चल्या राजा सुनताइच बेटो के पास।

कह्या चलके ज़ाहिर यो सारा अहवाल,
सुनी हौर कहा यूं वो चन्दर जवाल।

यक़ीं कर समझ ऐ महाराज तुईं,
सरंजाम इसका सो करतो हूँ मेईं।

दरूनी में जलती कही बात हँस,
कि यो काम करती हूँ सुन राजहंस।

सरंजाम इसका यो करने बदल,
रज़ा मुजको देना तू ऐ शह नवल।

---

१. शर्मिन्दा।

कही मुज रज़ा दे रज़ा दे रज़ा,
करूंगी मैं यो काम हर किस वज़ा।

कह्या तुज रज़ा है दिलो जाँ सती,
कि हर क्यूँ यो मुरदा उचा याँ सती।

पिदर को कही सो हुवा नइँ वो फ़ाम,
करी यक अजायब में वो नार काम।

सो जा घर में बैठी न किस बोलकर,
कही वो कर अपना कथा खोलकर।

अपस में अपीं आह मारन लगी,
सँगाती कूँ अपने पुकारन लगी।

न देखी अथी दुख जनम में कधी,
रही थी सदा यो मनम में वही।

न था आशिक़ी का मुजे फ़ाम कुछ,
यकायक सर ऊपर पड्या काम कुछ।

कही ये जो हासिल यो होना मुजे,
फिरा ज्वाब लेकर सो देना मुजे।

दरद आशिक़ाँ पर सो होता है क्यूँ,
सो आशिक़ दरूनी में रोता है क्यूँ।

कहाँ ते यो दुख आ पड्या मुज उपर,
ख़ुशी का मेरा सब छुड़ाया नगर।

दरोड़ा पड्या ग़म का मुज दिल भितर,
ख़ुशहाली का मेरा लुटा सब शहर।

यो दुख आज मुज जिवु का साथी हुवा,
यो साथो सो मुज जिवु का साथी हुवा।

इता जग में रहना नहीं खूब काम,
कि इस बाज जीना अपस कूं हराम।

यो दुख ने जलाया जवानी जिवन,
छुड़ाया उनें आज मेरा वतन।

अपस में इता रोवना खूब नईं,
मुख अंछुवा सतो धोवना खूब नईं।

मेरा दुख कहूँगी तो सरने का नईं,
हिकायत मेरी बेग सरने का नईं।

करूं जाके बेगी यो अपनी फ़िकर,
जो होवे खुदा का रहम कुछ मगर।

सो है आशिक़ां में यो आशिक़ अव्वल,
करे खस्द मिल जाने यां ते निकल।

मिलूं जाके बेगी मैं उस यार सूं,
जो वासिल करूं जीव उस यार सूं।

सो खलवत[1] से ज्यूं मार आयी उनें,
सहेल्यां को अपने बुलायी उनें।

सहेल्यां मने एक सहेली को बोल,
कती हूं तुजे मैं के यूं जाके बोल।

---

१. एकान्त।

कही जा रज़ा पाऊँ सबकी रज़ा,
मैं जा देखूं आशिक़ अहे किस वज़ा।

पिदर हौर मादर कूं बोलो सलाम,
कि वर राजशाही रहो तुम मुदाम।

विदा है नन्हे हौर बड़े सूं इता,
विदा है ज़े खैशां[1] खराबत[2] जिता।

विदा है अजीज़ां व मायां सती,
विदा है यो मानां व मायां सती।

विदा है सहेल्यां रहो खुश मूदाम,
करूं जाके आशिक़ सूं कुछ हम क़लाम।

खुदा पास जो मैं मंगी बार-बार,
मेरे बाद मिल कर रहें एक ठार।

दोआ तो मेरी वो किया मुस्तजाब[3],
तू ऐ मां रज़ा देके जाऊं शिताब।

कही अलविदा, अलविदा, अलविदा,
कि होती हूं मैं आज सब सूं जुदा।

सहेल्यां कहत्यां यूं कि चन्दरबदन,
तू सब सूं जुदा होती है किस कधन।

कही यूं वो नाजुक मिठे बोल सूं,
सो बेगी मिलूं जाके उस पिऊ सूं।

---

१. अपने, २. सम्बन्धी, ३. स्वीकार होना।

वो आशिक़ मुँवा है जो मेरे बदल,
रहूँ मैं इता अब सूँ किसके बदल।

रज़ा मुजको वाजिब नहीं है इताल,
कि मिलना है जा बेग उस सँ इताल।

मेरा दुख कहूँगी तो सर से न ओ,
हिक़ायत या मेरा पिसर से न आ।

रज़ा देवु सहेल्याँ इता तुम तमाम,
कहो जाके मेरा सबूँ को सलाम।

कि आशिक़ को मोहबत करूँ इख्तियार,
दोनूं मिलके गुलशन में रहें एक ठार।

वो चन्दरबदन बैठी अब ठार पर,
कही जा इता शह कूँ बोलो ख़बर।

सो मौंराय राजे को यूँ जाब दी,
अरस मुख के अफ़ताब को ताब दी।

बुलाई यकस को अपसकन ज़रूर,
कही यूँ के जा कह तूं शह के हुज़ूर।

कहो जाके भी शह को मेरा सलाम,
बजद तुम हुवे हैं कि ऐ नेक नाम।

सो यूँ बोलो शह को मेरे नाम सूँ,
अता मुज हुवा इश्क़ के जाम सूँ।

कि सुलतान फ़ाज़िल तू फ़ाज़िल अहे,
जो अटक्या जनाज़ा सो कामिल अहे।

यो होता नहीं क़ाम तुमना कूँ कूछ,
खड़े देखते सब दिवाने अबूझ।

कि वो काम आसाँ करूँगी जिता,
तुम्हारी यो मुशकिल अहे सो वुता।

तुमन पास गर ख़ूब आलिम अछे,
कि तहसील इसका जो सालिम अछे।

दरंग कर न भेजो सो मुज पास लग,
जो ल्यावे खबर मुजथे तुमना तलग।

किया जाके क़ासिद ने शह को ख़बर,
सुन उस बात को शाह दिलशाद कर।

कह्या शाह ने फिर के क़ासिद को यूँ,
कि सच बोल चन्दर कती है सो क्यूँ।

कह्या शाह ने यूँ मुजे है फ़रज़,
कि करना अदा है यो उसका क़रज़।

कह्या फिर के क़ासिद कूँ शह नेक नाम,
कता हूँ तुजे मैं जबानी क़लाम।

किया हुक्म उसको भी कह बेग कर,
दिया भेज आलिम को शह मुख़्तसर।

कि हँपड़्या है आलम महल के कने,
खड़ा हूँ तू जा बोल चन्दर कने।

कह्या जाके क़ासिद परी को ख़बर,
सुनो होर महल के लिया गयी भितर।

चन्दरबदन अज़ बादशाहे आलम तलबीदन*

मो अँपड़्या वो आलम परी पास ज्यूँ,
अँगे आ किया वो सलाम उसको यूँ।

कही फिर अलैकुम सलाम उसको यूँ,
ज़बाँ खोल बोली बचन ख़ास ज्यूँ।

उठी हौर गयी बेग हम्माम कूँ,
लिये आब कर पाक तन-जान कूँ।

ग़ुसल कर वो चन्दरबदन पाक हो,
सँवारी अपस कूँ वो चालाक़ हो।

बजाँ आके आलिम कूँ कीती सलाम,
कही मुजकूँ कह भी तूँ शीरी कलाम।

हुवा पाक मुज तन हुआ साफ़ दिल,
वो आशिक़ अंगे मैं न होसूं क़ज़िल।

कि शह कूँ दोवा कर यो बोलो निशाँ,
इता न अटकसे जनाज़ा यहाँ।

कही बस इता भोत गुफ़्तार तूँ,
निकल जा महलसूं सो हो मार तूँ।

---

* बुलाना चन्दरबदन का आलिम को बादशाह के पास से।

कही दौर चली वईं सो घरके भितर,
सो उठ कर चल्या मार आलिम गुहर।

सो यूँ कह सोई जा अपन ठार वईं,
निकल रूह तन सूँ चल्या मार वईं।

सहेल्याँ समजत्याँ कि चन्दरबदन,
गयो नींद मातो हो सोने कधन।

वले नईं समजत्याँ कि महयार ने,
क़िराँ[1] होके निकल्या कि यकबार ने।

फ़ना हो अपे हौर फ़ना कर उसे,
दिखा खूब हासिल बक़ा पर उसे।

कहाँ इश्क़ इतना जा हासिल करे,
करे तन फ़ना जीव वासिल करे।

कहाँ इश्क़ ऐसा जो महबूब सूँ,
फ़ना होके वासिल हुवे खूब सूँ।

जिते हैं यो दुनिया जफ़ा शोर में,
मरे तो रहे मिलके यक गोर में।

शरहाँ[2] सट[3] मुक़ीमी पिरत प्यार का,
क़िसा कह तूँ पूरा सो महयार का।

---

१. मिलना, २. विवरण, ३. छोड़ना।

वफ़ात शुदन चन्दरबदन*

कि ज्यूँ मार निकल्या वो आलिम फ़जल,
चल्या वई ज़नाज़ा वहाँ तें निकल।

रवाना हुआ शह ज़नाज़े कूँ ले,
सो मंजित पे ल्या रख उतारे तले।

मिले लोग सारे सो यकबारगी,
संवर खूब तुरबत सो महयार की।

हुवा ज्यूँ अमल सब क़बर का तमाम,
उठ्या दफ़्न करने कूँ शह नेकनाम।

शहा देखकर कुदरते बेनियाज,
कि आशिक़ ज़नाज़े का कीता नमाज़।

मँग्या जो क़बर में उतारूँ उसे,
दफ़न कर दुनिया सूँ बिसारूँ उसे।

जो देख्या जनाज़े में महयार कूँ,
तो है जुफ़्त[1] मिलकर सो उस नार सूँ।

---

* मरना चन्दरबदन का।

१. मिला हुआ।

क़फ़न बीच आकर वो चन्दरबदन,
गले लग के सोती है ज्यूं एक तन।

गले उस लगे लग पिरत-प्यार सूँ,
पिरत मद-मोहब्बत को महयार सूँ।

जुदा उनको हरचन्द करने मँगे,
कि दानों कूँ दा ठार धरने मँगे।

न कीते अपस में जुदाई पिज़ीर[1],
कि थे आशिकाँ में यो दो बेनज़ीर।

तो यूं लग अपस में वो सोते अथे,
जुदा वो किसी ते न होते अथे।

देख्या शाह हैरान इस हाल कूँ,
किया वईंच मदफ़ून[2] उसी हाल सूं।

किया ज्यूं दफन उस रसम सूं तमाम,
खतम करके कऊँ फ़ातिहा व क़लाम।

सो मंजिल को अपड़ा के महयार कूं,
निकल शाह चलिया फिर उसी ठार कूं।

किये काम ऐसा न देखा किनें,
अजब हो रहे लोग जितने जनें।

सुन्या कोई न अछ से हुवा है कहाँ,
जो देख्या अछे कोई फिरके जहाँ।

---

१. पसन्द, २. दफ़्न करना।

न अव्वल न आख़र न ऐसा मगर,
जो होठाँ में ही जीव रह्या था पकड़।

मगर जिवु मुठी में पकड्या अथा,
दिया जीव कुछ बान[1] मारा न था।

ख़तम कर मुरत्तिब[2] सो फ़ातेहा-क़लाम,
चल्या वाँ सती शह इता नेकनाम।

सो फिर-फिर बहुत शाह रोता गया,
सो बाद अज़ अपस मुल्क जाना किया।

सो करता चल्या याद सुबहान का,
तमाशा अजायब देक उस जान का।

वो माँ-बाप सगले सहेल्याँ तमाम,
सो रोत्याँ अथ्याँ ग़म में हर सुबो-शाम।

सो रंगरापति दौर कबीला तमाम,
सगल शहर के जो अथे ख़ासो आम।

हुवे भोत उनें ज़र्द ग़ल त मगर,
सो चन्दर सूँ सूना पड्या सब नगर।

दुनिया तो फ़ना है मुक़ीमी सही,
रहेगी बचन की नशानी यही।

तू हर जाके बीनी व सह वो ख़ता[3],
मरा बद न गोयद ज़े बहरे ख़ुदा[4]।

---

१. बिना, २. व्यवस्थित, ३. जहाँ कहीं भी तुझे भूल नज़र आए, ४. ख़ुदा के लिए मुझे बुरा न कहें।